Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 32-33

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

10-17 अगस्त 2017 ई. 17-24 ज़िलकअदा 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

जब तक व्यक्ति ज़िन्दा ख़ुदा की ज़िन्दा शक्तियों का निरीक्षण नहीं करता शैतान उसके दिल में से नहीं निकलता और न सच्ची तौहीद (एकेश्वरवाद) उसके दिल में प्रवेश करता है और न निश्चित रूप से ख़ुदा की हस्ती का क़ायल हो सकता है। और यह पवित्र और पूर्ण तौहीद केवल आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माध्यम से मिलती है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

मैं हमेशा आश्चर्य की निगाह से देखता हूं कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद है (हज़ार-हज़ार दरूद और सलाम उस पर) यह किस बुलंद शान का नबी है। इसके बुलंद मुक़ाम का अंत मालूम नहीं हो सकता और उसकी पवित्रता के प्रभाव का अनुमान करना मनुष्य का काम नहीं। अफसोस कि जैसा हक़ पहचान का है उसके मर्तबा को पहचाना नहीं गया। वह एकेश्वरवाद जो दुनिया से खो चुका था वही एक पहलवान है जो फिर से उसे दुनिया में लाया। उसने ख़ुदा से अत्यंत प्रेम किया और मानवजाति से अत्यंत सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया इसलिए ख़ुदा ने जो उसके दिल के रहस्यों से परिचित था उसको समस्त नबियों और समस्त पहलों और बाद में आने वालों पर श्रेष्ठता प्रदान की और उसकी मुरादें उसके जीवन में उसे दीं। वही है जो प्रत्येक फ़ैज़ (आध्यात्मिक लाभ) का स्रोत है और वह व्यक्ति जो उसके आध्यात्मिक लाभ से लाभान्वित होने का इक़रार किए बिना किसी श्रेष्ठता का दावा करता है, वह इन्सान नहीं है बल्कि शैतान की औलाद है क्योंकि प्रत्येक श्रेष्ठता की कुंजी उसको दी गई है और प्रत्येक मा'रिफत का ख़ज़ाना उसे प्रदान किया गया है। जो उसके माध्यम से नहीं पाता वह हमेशा के लिए वंचित है। हम क्या चीज़ हैं और हमारी वास्तविकता क्या है। हम काफिर-ए-ने'मत होंगे अगर इस बात को स्वीकार न करें कि वास्तविक एकेश्वरवाद हमने इसी नबी के माध्यम से पाया और ज़िन्दा ख़ुदा की पहचान हमें इसी पूर्ण नबी के माध्यम से और उसके प्रकाश से मिली है और ख़ुदा से वार्तालाप और संबोधन का श्रेय भी जिससे हम उसका चेहरा देखते हैं इसी बुज़ुर्ग नबी के द्वारा हमें प्राप्त हुआ है। इस हिदायत के सूर्य की किरणें धूप की तरह हम पर पड़ती हैं और उसी समय तक हम प्रकाशित रह सकते हैं जब तक कि हम उसके समक्ष खड़े हैं।

वे लोग जो इस विचार पर जमे हुए हैं कि जो व्यक्ति आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान न लाए या मुर्तद हो जाए और तौहीद पर क़ायम हो और ख़ुदा को वाहिद लाशरीक (एकमात्र अद्वितीय) जानता हो वह भी मुक्ति पा जाएगा और ईमान न लाने या मुर्तद होने से उसका कुछ भी हर्ज नहीं होगा जैसा कि अब्दुल हकीम खान का धर्म है ऐसे लोग वास्तव में तौहीद की वास्तविकता से ही बेख़बर हैं। हम बार-बार लिख चुके हैं कि यूं तो शैतान भी ख़ुदा तआला को वाहिद लाशरीक समझता है। लेकिन केवल एकमात्र समझने से मुक्ति नहीं हो सकती बल्कि मुक्ति तो दो बातों पर निर्भर है-

(1) एक यह कि पूर्ण विश्वास के साथ ख़ुदा तआला की हस्ती और एकता पर ईमान लाए।

(2) दूसरे यह कि ऐसी पूर्ण मुहब्बत अल्लाह तआला की उसके दिल में बसी हो कि जिसकी बुलंदी और प्रभुत्व का यह निष्कर्ष हो कि ख़ुदा तआला का आज्ञापालन उसकी जान का सकून हो जिसके बिना वह जी ही न सके और उसकी मुहब्बत समस्त अन्यों की मोहब्बतों को पराजित और नष्ट कर दे, यही वास्तविक तौहीद है कि जो हमारे सय्यद व मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पैरवी के बिना प्राप्त ही नहीं हो सकती। क्यों प्राप्त नहीं हो सकती? इसका जवाब यह है कि ख़ुदा की हस्ती अदृश्य और अत्यंत सूक्ष्म और अत्यंत छिपी हुई है जिसे इंसानी अकलें केवल अपनी शक्ति से खोज नहीं सकतीं और कोई बौद्धिक प्रमाण उसके अस्तित्व पर कतई तर्क नहीं हो सकते क्योंकि बुद्धि की दौड़ और प्रयत्न केवल इस हद तक है कि दुनिया के उद्योगों पर नज़र डालकर निर्माता की ज़रूरत महसूस करे लेकिन ज़रूरत महसूस करना और चीज़ है तथा इस पूर्ण विश्वास की स्थिति तक पहुँचना कि जिस ख़ुदा की ज़रूरत स्वीकार की गई है वह वास्तव में मौजूद भी है, यह और बात है। और चूँकि बुद्धि के तरीके घटिया, अपूर्ण और संदिग्ध हैं इसलिए प्रत्येक दार्शनिक केवल बुद्धि के माध्यम से ख़ुदा की पहचान नहीं कर सकता बल्कि अक्सर ऐसे लोग जो केवल बुद्धि के माध्यम से ख़ुदा तआला का पता लगाना चाहते हैं अंततः दहरिया बन जाते हैं। और ज़मीन व आसमान की वस्तुओं पर विचार करना उनको कुछ भी लाभ नहीं पहुंचा सकता। और ख़ुदा तआला के कामिलों पर ठट्ठा और हंसी करते हैं और उनकी यह हुज्जत है कि दुनिया में हज़ारों ऐसी चीज़ें पाई जाती हैं जिनके अस्तित्व का हम कोई लाभ नहीं देखते और जिन में हमारे बौद्धिक अनुसंधान से कोई ऐसी कारीगरी साबित नहीं होती जो निर्माता पर दलालत करे बल्कि बस व्यर्थ और अवैध रूप से इन चीजों का अस्तित्व पाया जाता है। अफ़सोस वे नादान नहीं जानते कि ज्ञान के अभाव से वस्तु का अभाव अनिवार्य नहीं होता। इस प्रकार के लोग कई लाख इस ज़माने में पाए जाते हैं जो स्वयं को प्रथम श्रेणी के बुद्धिमान और दार्शनिक समझते हैं और ख़ुदा तआला के अस्तित्व से इंकार करते हैं। अब स्पष्ट है कि अगर कोई ज़बरदस्त तर्कसंगत दलील उन्हें मिलती तो वे ख़ुदा तआला के अस्तित्व से इनकार नहीं करते। और अगर अल्लाह तआला के अस्तित्व पर कोई विश्वसनीय तर्कसंगत दलील उन्हें आरोपी बनाती तो वे बड़ी अभद्रता और ठट्ठे और हँसी के साथ ख़ुदा तआला के अस्तित्व से इन्कारी न हो जाते। अतः कोई व्यक्ति दार्शनिकों की नाव पर बैठकर संदेहों के तूफान से छुटकारा नहीं पा सकता बल्कि अवश्य डूब जाएगा और हरगिज़-हरगिज़ शुद्ध एकेश्वरवाद (तौहीद) का शरबत उसे प्राप्त नहीं होगा। अब सोचो कि यह विचार कितना झूठ और बदबूदार है कि बिना स्रोत नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एकेश्वरवाद प्राप्त हो सकता है और इससे व्यक्ति मुक्ति प्राप्त कर सकता है। हे अज्ञानियो! जब तक ख़ुदा की हस्ती पर पूर्ण विश्वास न हो उसके 'एक' होने पर कैसे विश्वास हो सके। अतः निश्चय समझो कि सुनिश्चित एकेश्वरवाद केवल नबी के माध्यम से ही मिल सकता है जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अरब के दहरियों और वि धर्मियों को हज़ारों आसमानी निशान दिखला कर ख़ुदा तआला की हस्ती का क़ायल कर दिया और अब तक आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची और सही पैरवी (अनुपालन) करने वाले इन निशानों को दहरियों के सामने पेश करते हैं। बात यही सच है कि जब तक ज़िन्दा ख़ुदा की ज़िन्दा शक्तियों का व्यक्ति निरीक्षण नहीं करता शैतान उसके दिल में से नहीं निकलता और न सच्चा एकेश्वरवाद उसके दिल में प्रवेश करता है और न निश्चित रूप से ख़ुदा की हस्ती का क़ायल हो सकता है। और यह पवित्र और पूर्ण तौहीद (एकेश्वरवाद) केवल आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माध्यम से मिलती है।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 118-121)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ज़िक्रे इलाही

तकरीर हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो

जलसा सालाना 28 दिसंबर 1916 ई. (भाग-7)

दुआ में ध्यान बनाए रखने के तरीके:

(अंतिम भाग)

उन्नीसवां तरीका:

क़याम और रकूअ और सिज्दा की स्थिति में फुर्ती रखनी चाहिए। अर्थात जब खड़ा हो तो मज़बूती और होशियारी से खड़ा हो। यह नहीं कि एक पैर पर बोझ डाल कर दूसरे को ढीला छोड़ दिया जाए क्योंकि जब सुस्ती धारण की जाती है तो दुश्मन कब्ज़ा पा लेता है। फिर ज़ाहिरी फुर्ती का प्रभाव भीतरी फुर्ती पर भी पड़ता है इसलिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया है कि सभी हरकतों में चुस्त रहना चाहिए।

बीसवां तरीका:

कुछ सूफ़ियों ने इसमें सीमा से बढ़ जाने से काम लिया है। यद्यपि मैं सीमा से बढ़ जाने को पसंद नहीं करता लेकिन मोमिन लाभ उठा सकते हैं।

जुनैद बग़दादी[र.] एक बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, शिबली[र.] उनके शिष्य थे जो बहुत श्रद्धा और अल्लाह तआला का भय रखते थे। आप एक प्रांत के राज्यपाल थे। एक बार बादशाह के दरबार में जो आए तो एक बड़े सरदार को जिसने कोई बहुत बड़ी सेवा की थी उनके सामने एक इनाम के रूप में लिबास दिया गया। उस सरदार को कुछ कष्ट था इसलिए उसके नाक से पानी बह गया। रूमाल लाना भूल गया था। बादशाह से नज़र बचाकर इसी लिबास से अपनी नाक साफ कर ली। बादशाह ने देख लिया और बहुत ग़ुस्सा होकर कहा हमारे लिबास का यही मान है। शिबली[र.] के दिल में चूँकि अल्लाह तआला का भय था इसलिए उनके दिल में इस घटना का ऐसा असर हुआ कि बेहोश हो गए और जब होश आया तो कहा कि राज्यपाल के काम से इस्तीफा देता हों। बादशाह ने कारण पूछा तो कहा कि आप ने इस सरदार को लिबास दिया था जिस का इस ने सम्मान न किया तो आप उस पर इतना नाराज़ हुए लेकिन ख़ुदा ने जो मुझे अनगिनत नेअमतें दी हैं यदि उनकी अवहेलना करूंगा और उनका शुक्रिया अदा न करूंगा तो मुझे कितनी सज़ा मिलेगी। इसके बाद आप जुनैद[र.] के पास गए और कहा कि मुझे अपना शिष्य बना लीजिए। उन्होंने कहा मैं तुझे शिष्य नहीं बनाता तू गवर्नर रहा है और इस हालत में तूने अल्लाह तआला की सृष्टि पर कई प्रकार के अत्याचार किए होंगे। उन्होंने कहा इसका कोई इलाज भी है। जुनैद[र.] ने कहा कि जिस क्षेत्र के तुम राज्यपाल रहे हो उस में जाओ और हर घर में जा कर कहो कि अगर मुझसे किसी पर कोई अत्याचार हुआ है तो वह बदला ले ले। अत: उन्होंने ऐसा ही किया।

आप के बारे में लिखा है कि आप जब नफिल पढ़ते और शरीर में किसी प्रकार की सुस्ती पाते या दिल में ऐसे विचार आते जो उन्हें दूसरी ओर आकर्षित करना चाहते तो लकड़ी लेकर अपने शरीर को पीटना शुरू कर देते चाहे लकड़ी टूट जाती और फिर पढ़ना शुरू कर देते। आरम्भ में तो लकड़ियों का गट्ठा अपने पास रखते थे। यह चरम था और मुझे लगता है कि इस्लाम इस बात को पसन्द नहीं करता। लेकिन यह उनके अपने स्वयं के बारे में मामला है इसलिए मैं उन पर कोई आपत्ति भी नहीं करता। हाँ मेरे पास नफ्स को सज़ा देने का यह तरीका है कि अगर किसी रकअत में कोई विचार उत्पन्न हो तो देखना चाहिए कि किस इबारत के पढ़ते समय यह समय विचार पैदा हुआ है। जब यह पता चल जाए तो उसी जगह से फिर पढ़ना शुरू कर देना चाहिए। इस तरह से जब नफ्स यह देख लेगा कि यह तो अल्लाह तआला की तरफ ही झुक रहा है और मेरी नहीं मानता तो विचारों के फैलाने से रुक जाएगा और सुकून हासिल हो जाएगा।

इक्कीसवां तरीका:

यह तरीका एक रूप से बहुत बड़ा और बहुत अधिक काम में आने वाला है और वह यह कि عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ (अलमोमेनून: 4) मोमिन कोई व्यर्थ काम नहीं किया करते। जिन लोगों को व्यर्थ विचारों की आदत होती है उन्हीं के दिलों में नमाज़ पढ़ते समय दूसरे विचार आते हैं। लेकिन अगर वह इस तरह करें कि प्रथम दिन से ही इस प्रकार के विचार न आने दें तो उन्हें अराजकता की स्थिति पैदा ही नहीं होगी। लेकिन अक्सर लोग शेख चिल्ली की तरह विचारों में पड़े रहते हैं। हालांकि उनका कोई लाभ नहीं होता। ऐसे विचार जो केवल काल्पनिक हों उनमें संलग्न होने के लिए नफ्स को कभी इजाज़त नहीं देनी चाहिए। हाँ उपयोगी और लाभदायक बातों के बारे में सोचने में कोई हर्ज नहीं है। विशेष रूप से उन मामलों में सोचना जो पहले हो चुके हैं और उन पर अब सोचने से कोई लाभ नहीं हो सकता, चिंता करना तो सीमा से बढ़ी हुई मूर्खता है।

यह एक स्पष्ट बात है कि मानवीय शक्तियों को जिस तरफ लगाया जाए वह उधर ही आकर्षित हो जाती हैं। अत: जब कोई व्यक्ति अनुचित विचारों में दिमाग़ को लगाता है तो वह उचित बातों की ओर ध्यान करने में असमर्थ रहता है। अत: व्यर्थ विचारों से मस्तिष्क को रोककर उच्च और उपयोगी विचारों पर लगाना चाहिए। जब यह कोशिश की जाएगी तो हमेशा उपयोगी मामलों पर विचार करने की ओर तबीयत आकर्षित होगी। और एक बात में संलग्न होने की स्थिति में दूसरी ओर विचारों को लगा देना उपयोगी नहीं बल्कि व्यर्थ है, सिवाए उसके जो अल्लाह चाहे। अत: ऐसे व्यक्ति का मन जिसने उसे उपयोगी बातों पर विचार करने की आदत डाली है, नमाज़ के समय इधर उधर जाएगा ही नहीं।

बाईसवां तरीका:

यह भी एक भव्य तरीका है और रूहानियत की पूर्णता तक पहुंचा देता है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया था कि एहसान किया है। आपने फ़रमाया-

اَنْ تَعْبُدَاللّٰهَ كَاَنَّكَ تَرَاهُ فَاِنْ لَّمْ تَكُنْ تَرَاهُ فَاِنَّهُ يَرَاكَ

(बुख़ारी किताबुल ईमान)

अल्लाह तआला की इस तरह इबादत की जाए कि मानो बन्दा ख़ुदा को देख रहा है या कम से कम यह विचार हो कि ख़ुदा मुझे देख रहा है। अत: जब नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हो तो यही नक्शा अपनी आंखों के सामने जमाओ कि मानो अल्लाह तआला के सामने खड़े हो और वह तुम्हें सामने दिखाई दे रहा है, किसी रूप में नहीं बल्कि अपनी महिमा और महानता के साथ। इस तरह अल्लाह तआला की महानता और बड़ाई दिल में बैठ जाती है और नफ्स स्वयं समझ लेता है कि ऐसे समय में इसे कोई व्यर्थ हरकत नहीं करनी चाहिए। फिर अगर ख़ुदा को न देख सको तो कम से कम इतना तो यकीन हो कि ख़ुदा मुझे देख रहा है और मेरे दिल के सभी विचारों को पढ़ रहा है। इंसान देखे कि जब मैं ज़बान से अल्हम्दो लिल्लाह कह रहा हूँ, मेरा दिल भी अल्हमदो लिल्लाह कह रहा है या किसी और विचार में संलग्न है। और अगर दिल किसी ओर आकर्षित है तो उसे बुरा भला कहे और अपनी ज़बान के साथ शामिल कर ले। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि वह बंदा जो दो रकअत भी ऐसी पढ़ता है कि उनमें अपने नफ्स से बातें नहीं करता उसके सारे गुनाह माफ हो जाते हैं। अब विचार करो कि वह व्यक्ति जिसकी हमेशा ही ऐसी हालत रहती हो वह कितना पुण्य प्राप्त कर लेगा। अत: नमाज़ में अल्लाह तआला की तरफ ध्यान बनाए रखना कोई मामूली बात नहीं है। फिर ये तरीके जो केवल अल्लाह तआला के अहसान और फज़ल से मैंने आप लोगों को बताए हैं उन्हें मामूली न समझना चाहिए बल्कि उनका पूर्णता पालन करो और याद रखो कि अगर पालन करोगे तो बहुत बरकत पाओगे।

नमाज़ की समाप्ति पर जो अस्सलामो अलैकुम कहा जाता है इस में भी अजीब इशारा है। और इसमें ध्यान बनाए रखने की तरफ मनुष्य को आकर्षित किया गया। देखो अस्सलामो अलैकुम तब कहा जाता है, जबकि कोई व्यक्ति कहीं से आता है। नमाज़ ख़त्म करने के समय जब एक मोमिन अस्सलामो अलैकुम ब रहमतुल्लाह कहता है तो मानो वह यह कहता है कि मैं ख़ुदा तआला के समक्ष अपनी बन्दगी को अभिव्यक्त करने के लिए गया था अब वहाँ से वापस आया हूँ और तुम्हारे लिए सलामती और रहमत लाया हूँ। मगर क्योंकि वह व्यक्ति पूरे समय वहीं मौजूद होता है इसलिए इसका यही मतलब लिया जा सकता है कि उसकी रूह अल्लाह तआला के अस्ताना पर गिरी हुई थी और वह इबादत में ऐसा संलग्न था कि मानो इस दुनिया से ग़ायब था। अत: अस्सलामो अलैकुम का कहना नमाज़ की समाप्ति पर इस बात की तरफ इशारा है कि मोमिन को चाहिए कि सावधान होकर अपनी नमाज़ की रक्षा करे क्योंकि उस समय वह अल्लाह तआला के दरबार में हाज़िर होता है। इसीलिए अल्लाह तआला ने भी फरमाया है-

शेष पृष्ठ 15 पर

ख़ुत्बः जुमअः

जैसा कि नबियों के इतिहास को हम देखते हैं तो यह पाते हैं कि उनके दावे के बाद उनकी मुख़ालिफ़त होती है और ज्यों-ज्यों उनके मानने वालों की जमाअत बढ़ती है तो मुख़ालिफ़त और जलन की आग भी बढ़ना शुरू हो जाती है। विरोधी मुख़ालिफ़त के हर संभव ढंग अपनाते जाते हैं। चूँकि दावा करने वाला अल्लाह की ओर से भेजा गया होता है और अल्लाह तआला उसे मुख़लिफ़तों के बावजूद तरक़्क़ी के वादे और ख़ुशख़बरियाँ दिए हुए होता है। इसलिए कोई मुख़ालिफ़त उसकी तरक़्क़ी की राह में रोक नहीं बनती और न बन सकती है।

अल्लाह तआला ने जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मसीह और महदी बनाकर भेजा तो उसके साथ भी उसी तरह व्यवहार होना था और अल्लाह तआला के विधानानुसार उसकी सहायता और समर्थन का सुलूक भी होना था। अल्लाह तआला उसकी जमाअत के साथ भी यही सुलूक फ़र्मा रहा है।

कहीं अल्लाह तआला मुख़ालिफ़ों की चालें उन्हीं पर उल्टाकर अपनी सहायता के नज़ारे दिखाता है, कहीं ख़ुद उनका मार्गदर्शन करके उन्हें अहमदियत की सच्चाई दिखाता है। कहीं दूसरों के दिलों में डालता है कि वे मुख़ालिफ़ों के हमलों के ख़िलाफ़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों की सहायता और समर्थन करें। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला के जो वादे हैं उनके अमली सबूत समय-समय पर प्रकट होते रहते हैं।

मुख़ालिफ़ों के बुरे अंजाम, नेक फितरत लोगों की सच्चाई की तरफ रोअया और कुशूफ़ के द्वारा रहनुमाई, मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिली मुहिब्बों के समूह में वृद्धि से संबंधित अत्यंत ईमान अफरोज़ वाक़ियात का वर्णन

अतः अल्लाह तआला शैतानी हमलों की मुख़ालिफ़तों के बावजूद नेक फ़ितरत लोगों की रहनुमाई फ़रमाता रहता है और उनके सीने खोलता है और अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ देता है। ऐसी बहुत सी घटनाएँ सामने आती हैं जब अल्लाह तआला ख़ुद पकड़कर अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है और लोगों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सहायता और समर्थन के नज़ारे दिखाता है।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 7 जुलाई 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

जैसा कि नबियों के इतिहास को हम देखते हैं तो यह पाते हैं कि उनके दावे के बाद उनकी मुख़ालिफ़त होती है और ज्यों-ज्यों उनके मानने वालों की जमाअत बढ़ती है तो मुख़ालिफ़त और जलन की आग भी बढ़ना शुरू हो जाती है। विरोधी मुख़ालिफ़त के हर संभव ढंग अपनाते जाते हैं। चूँकि दावा करने वाला अल्लाह की ओर से भेजा गया होता है और अल्लाह तआला उसे मुख़लिफ़तों के बावजूद तरक़्क़ी के वादे और ख़ुशख़बरियाँ दिए हुए होता है। इसलिए कोई मुख़ालिफ़त उसकी तरक़्क़ी की राह में रोक नहीं बनती और न बन सकती है।

अल्लाह तआला ने जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मसीह और महदी बनाकर भेजा तो उसके साथ भी उसी तरह व्यवहार होना था और अल्लाह तआला के विधानानुसार उसकी सहायता और समर्थन का सुलूक भी होना था। अल्लाह तआला उसकी जमाअत के साथ भी यही सुलूक फ़र्मा रहा है। अल्लाह तआला ने जहाँ मुख़ालिफ़तों के बारे में पहले से ख़बर दी वहाँ मुख़ालिफ़ों के बुरे अन्जाम और आपके सिलसिले के बढ़ने और आपकी सहायताओं की ख़बर दी। अतः अल्लाह तआला की ओर से आपको बहुत से इल्हाम हुए, जिनमें से एक यह भी है कि "मैं तेरे सच्चे और घनिष्ठ मित्रों का समूह भी बढ़ाऊँगा।" (आइना कमालाते इस्लाम, रूहानी खज़ायन जिल्द 5, पृष्ठ 648) फिर एक यह भी है कि "मैं तेरे साथ और तेरे प्यारों के साथ हूँ।" (बदर जिल्द-6 न. 51, तिथि 19 दिसंबर 1907 ई. पृष्ठ 4) फिर फ़रमाया कि نُوْحِيْ اِلَيْهِمْ مِنَ السَّمَآءِ अर्थात् तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिनके दिलों में हम अपनी ओर से इल्हाम करेंगे। (हकीक़तुल वह्यी रूहानी खज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ-77) फिर फ़रमाया मैं तुझे इज़्ज़त दूँगा और बढ़ाऊँगा। फिर फ़रमाया يَنْصُرُكَ اللّٰهُ مِنْ عِنْدِهٖ कि ख़ुदा अपनी ओर से तेरी मदद करेगा। (हकीक़तुल वह्यी रूहानी खज़ायन जिल्द-22, पृष्ठ-77) फिर पैग़ाम पहुँचाने के बारे में अल्लाह तआला का यह वादा भी है कि "मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुँचाऊँगा।" फिर यह भी फरमाया-كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِي कि ख़ुदा ने यह फ़ैसला कर छोड़ा है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब आएँगे। इसी तरह समर्थन और सहायता के और भी बहुत से इल्हाम हैं।

यह कपोल कल्पित बातें नहीं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआला की ओर मंसूब करके कहीं, बल्कि हर ज़माने में अल्लाह तआला इसका प्रमाण भी प्रकट करता रहता है। कहीं अल्लाह तआला मुख़ालिफ़ों की चालें उन्हीं पर उल्टाकर अपनी सहायता के नज़ारे दिखाता है, कहीं ख़ुद उनका मार्गदर्शन करके उन्हें अहमदियत की सच्चाई दिखाता है। कहीं दूसरों के दिलों में डालता है कि वे मुख़ालिफ़ों के हमलों के ख़िलाफ़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों की सहायता और समर्थन करें। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला के जो वादे हैं उनके अमली सबूत समय-समय पर प्रकट होते रहते हैं।

इस समय मैं मुख़ालिफ़ों के बुरे अन्जाम से सम्बन्धित दो घटनाएँ प्रस्तुत करता हूँ जो अहमदियों के लिए, जहाँ ईमानवर्धन का कारण बनें वहीं वे दूसरों के लिए भी अहमदियत की सच्चाई का निशान बनें।

नाज़िर साहब दावत इलल्लाह क़ादियान ने लिखा है कि इस्हाक़ नामक उनके एक मुअल्लिम साहिब रमज़ान के निकट पास के एक गाँव में अपने एक रिश्तेदार के घर रोज़ों के इफ़्तार और रखने का समय बताने गए। जब वह घर वालों को रोज़ों की महानता और बरकत बताकर उसकी समय-सारणी देने लगे तो उसी समय इक़बाल नामक एक ग़ैर अहमदी नवजवान आकर उनके पास बैठ गया और कुछ देर मुअल्लिम साहिब की बातें सुनने के बाद उसने घर वालों से पूछा कि यह कौन है? घर वालों ने शायद खोलकर बताना मुनासिब न समझा कि यह जमाअत अहमदिया का मुअल्लिम है। उन्होंने केवल इतना कहा कि अमुक गाँव से आया है। लेकिन मुअल्लिम साहिब ने साफ़ तौर पर अपना परिचय करवाया कि मैं जमाअत अहमदिया का मुअल्लिम हूँ। इस पर वह आदमी ग़ुस्से से आगबबूला हो गया।

मुअल्लिम ने अपना पूरा परिचय करवाना चाहा ताकि उसकी गलतफ़हमियाँ दूर हो जाएँ, लेकिन उसने सुनने से इन्कार कर दिया। कहते हैं कि बातचीत के दौरान जब क़ुर्आन मजीद, इस्लाम, और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नाम आता तो वह कहता कि आप लोगों को ये इस्लामी इस्तिलाहें प्रयोग करने का अधिकार नहीं। यह वही पाकिस्तानी मौलवियों वाली सोच का असर है। इसके अतिरिक्त जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम आता तो वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और जमाअत को बड़ी गन्दी-गन्दी गालियाँ देता और कहता कि मैं सऊदी अरब, बहरीन और क़तर इत्यादि में रहकर आया हूँ और आप लोगों के बारे में सब कुछ जानता हूँ। सारे इस्लामी देशों ने आप के ख़िलाफ़ फ़त्वे दिए हुए हैं और यह भी कहा है कि अगर रास्ते में साँप और क़ादियानी मिल जाएँ तो साँप को छोड़ दो और क़ादियानी को क़त्ल कर दो। इसके बाद वह कहते हैं कि बार-बार वह मुझे मारने के लिए उठता और कहता था कि आज मुझे मौक़ा मिला है कि मैं क़ादियानी को क़त्ल करूँ और पुण्य कमाऊँ, लेकिन वह कामयाब न हो सका। मुअल्लिम साहब कहते हैं कि मैं बड़े धैर्य से उसकी गालियाँ सुनता रहा। जब वह गालियों में हद से गुज़र गया तो मैंने उससे कहा कि अगर मैं जमाअत अहमदिया का मुअल्लिम न होता तो मरने-मारने की आपकी यह इच्छा भी पूरी कर देता, पर हमें गालियों के बदले दुआएँ देने की नैतिकता सिखाई गयी है इसलिए मैं कुछ नहीं कहता। इस बात पर वह चुप हो गया और माहौल को देखकर यह वारनिंग दी कि आज के बाद अगर तुम इस गाँव में नज़र आए तो बहुत बुरा हस्र होगा। मुअल्लिम साहिब कहते हैं कि मैंने उसको केवल यह उत्तर दिया कि यह तो समय बताएगा कि हस्र किसका बुरा होगा और यह कहकर मैं ख़ामोशी से वहाँ से उठकर चला गया। यह आदमी पास वाले गाँव में भी जमाअत के लोगों को कहा करता था कि जमाअत छोड़ दो, लेकिन वे इसकी बात पर ध्यान नहीं देते थे। मुअल्लिम साहिब कहते हैं कि मैंने रमज़ान के बाद 15 दिन की छुट्टी ली और वहाँ से चला गया, वापिस आने पर एक बूढ़ी औरत ने बताया कि मौलवी इक़्बाल जिसने जमाअत को गालियाँ दी थीं उसको अचानक हार्ट अटैक हुआ और वह मर गया। इस घटना से न केवल जमाअत के लोगों के ईमान में बढ़ोत्तरी हुई बल्कि वहाँ उस छोटे से गाँव में दूसरे लोग भी बहुत प्रभावित हुए कि हमने अपनी आँखों से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए अल्लाह तआला का यह समर्थन देखा और अपमान करने वाले को अपमानित और मरते देखा।

इसी तरह यमन के एक साहिब हैं जिनका नाम ग़ानम साहिब है मुख़ालिफ़ों के अन्जाम के बारे में लिखते हैं कि जब से मैं अहमदी हुआ हूँ, मैं तब्लीग़ कर रहा हूँ और विशेषत: नवजवानों की एक टोली की ओर से बहुत मुख़ालिफ़त और धमकियों का सामना करना पड़ा है। कहते हैं कि सन् 2010 ई. के रमज़ान में एक बार मेरा पड़ोसी और उसके कुछ साथी मुझे मज्बूर करके अपने एक मदर्सा जामिया-तुल-ईमान के शेख़ से बात करने के लिए ले गए। वहाँ एक मौलवी भी आ गया। मैंने पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सच्चे होने के प्रमाण दिए, फिर क़त्ल-ए-मुर्तद और जिहाद और वफ़ात-ए-मसीह के मसलों पर बात हुई और वे सब बिना किसी प्रमाण के अपने अक़ीदे प्रस्तुत करते रहे और मैं क़ुर्आन और हदीस से प्रमाण प्रस्तुत करता रहा। उनका बड़ा शेख़ तो कुछ नैतिकता से पेश आया लेकिन दूसरा बहुत अपशब्द बकता था और उसने मुबाहले का भी चैलेन्ज दिया। मैंने कहा कि मुबाहला तो इमाम से होता है। लेकिन उसकी जिद और इस कारण से कि ये लोग यह न समझें कि मुझे मसीह मौऊद की सच्चाई पर विश्वास नहीं है,मैंने मुबाहला क़ुबूल कर लिया और बातचीत ख़त्म हो गयी। इसके बाद ये नवजवान मुझे डराते-धमकाते रहे और गालियाँ देते रहे और तब्लीग़ से रोकते रहे। कहते हैं रमज़ान के आख़िर में एक दिन मैं घर से निकला तो एक बच्चे ने मुझे कहा कि ये नवजवान आपके ख़िलाफ़ षड़यन्त्र रच रहे हैं। फिर उनमें से कुछ ने आकर मुझे मारने की धमकी दी और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में अपमानजनक शब्द कहे। ग़ानम साहिब कहते हैं कि मैं जख़्मी दिल के साथ घर लौटा, 2 रकात नफ़िल पढ़ी और दुआ की कि हे अल्लाह! तू इन पर अपनी क़ुदरत दिखा। कहते हैं कि इसके बाद एक-दो दिन में उन नवजवानों की आपस में लड़ाई हो गयी और एक-दूसरे के ख़िलाफ़ चाकू निकाल लिया। इस लड़ाई में एक बच्चे के मुँह पर चाकू लग गया। इस घटना के बाद एक माह में ये कहीं चले गए उसके बाद अब तक नज़र नहीं आए। ग़ानम साहिब कहते हैं कि मेरा पड़ोसी भी मकान बेंचकर दूसरी जगह चला गया और उस जामिया पर जिसका वह मालिक था हूसी क़बीलों के बाग़ियों ने क़ब्ज़ा कर लिया। यह सब लोग भागकर फिर सऊदी अरब चले गए और उनका जामिया अब बमबारी के कारण मलबे का ढ़ेर बन गया है।

आजकल हम देखते हैं कि दुनियावी तरक़्क़ी की वजह से लोग दीन से दूर हट रहे हैं, लेकिन दुनिया में ऐसा वर्ग भी है जो धर्म से प्यार करता है और सही रास्तों की तलाश में है और अल्लाह तआला भी उनके दिलों को जानता है इसलिए युगावतार (युग के इमाम) को मानने के लिए उनके दिल भी खोलता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जब ख़ुदा ने भेजा है तो इसीलिए भेजा है कि लोग उसे क़बूल करें और अल्लाह के फ़ज़्ल से सत्प्रकृति लोग उसे क़बूल भी कर रहे हैं।

आयूरीकोस्ट के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि मैं एक गाँव में एक स्थानीय मु-बल्लिग़ के साथ तब्लीग़ के लिए गया तो लोगों को मसीह मौऊद और इमाम महदी के आने के बारे में बताया। कुछ समय के बाद पुन: वहाँ गए तो उस गाँव के इमाम समेत पन्द्रह लोगों ने अहमदियत क़बूल की। उनको बताया गया कि इस माह ख़ुद्दामुल अहमदिया का नेशनल इज्तिमा आबीजान में हो रहा है। इस पर गाँव वालों ने कहा कि एक आदमी को आबीजान भिजवाया जाए ताकि वह जमाअत को क़रीब से देखे कि ये लोग कैसे हैं। अत: उस गाँव से एक आदमी इज्तिमा में शामिल हुआ और जो कुछ देखा था वापिस आकर लोगों को बताया कि यह लोग किस तरह रहते हैं और किस तरह मुहब्बत-प्यार और भाईचारे का माहौल था। उसका बहुत अच्छा असर पड़ा। अत: कुछ समय के पश्चात् जब यह लोग पुन: वहाँ तब्लीग़ के लिए गए तो नमाज़ इशा के बाद रात में और नमाज़ फ़ज्र के बाद सुबह मसीह मौऊद की आमद के बारे में सवाल-जवाब होते रहे और काफी देर तक चलते रहे। कहते हैं कि इस पर और 26 लोगों ने अहमदियत क़बूल की। इस तरह वहाँ 41 लोगों पर आधारित जमाअत क़ायम हो गयी।

मुख़ालिफ़ किस तरह ज़ोर लगा रहे हैं कि अहमदियत को ख़त्म करें और अल्लाह तआला किस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए वादों के मुताबिक़ आपके मानने वालों की जमाअत को बढ़ा रहा है। इसकी एक घटना बयान करता हूँ। बेनिन के मुबल्लिग़ उन्सुर साहिब लिखते हैं कि जनवरी 2016 में एक गाँव में नयी जमाअत क़ायम हुई और 87 लोगों को बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली। कहते हैं वहाँ के इमाम को ट्रेनिंग दी गयी और विधिवत् नमाज़ जुमा की अदायगी शुरू कर दी गयी। मौलवियों को जब पता लगा तो उन्होंने बड़ा ज़ोर लगाया कि ये लोग जमाअत को छोड़ दें, मगर उस जमाअत के तमाम् नवमुबाययीन मज़बूती के साथ अहमदियत पर क़ायम रहे। जब उनको यहाँ से भी नाकामी हाथ लगी तो वे मौलवी वहाँ के बादशाह के पास गए और कहा कि इनको अहमदियत से रोकें। अत: बादशाह ने हमारे सदर को बुलाया और कहा कि अगर आपको मस्जिद चाहिए तो ग़ैर अहमदी मौलवी आप लोगों के लिए मस्जिद बना देते हैं, आप लोग अहमदियत छोड़ दें। इस पर सदर साहिब ने बादशाह से कहा कि आप अहमदियत के बारे में क्या जानते हैं। बादशाह ने उत्तर दिया कि मैं तो कुछ नहीं जानता, लेकिन मौलवी कहते हैं कि अहमदी मुसलमान नहीं, बल्कि ये बोकोहराम के लोग हैं और दहशतगर्द हैं। ये हम सबको क़त्ल कर देंगे। इस पर सदर साहिब ने बादशाह को बताया कि अहमदियत ही सच्चा इस्लाम है और यह मौलवी हमें धोखा देते हैं। पहले तो बादशाह ने बात न मानी और कहने लगा कि तुम अहमदियत को छोड़ दो और अगर नहीं छोड़ोगे तो मैं तुम्हें गाँव से निकाल दूँगा। इस पर सदर साहिब ने कहा कि हम गाँव छोड़ देंगे मगर अहमदियत नहीं छोड़ेंगे (यह ईमान है उन ग़रीब लोगों का और दूरदराज़ रहने वालों का)। इस पर बादशाह का दिल बदल गया और उसने कहा कि तुम्हें गाँव छोड़ने की ज़रूरत नहीं, जैसे दिल चाहता है वैसे करो। फिर अल्लाह तआला ने वहाँ उनके क़दम जमा दिए और न केवल

मानने वालों के ईमान को मज़बूत किया और उनको मुहब्बत में बढ़ाया बल्कि मुख़ालिफ़ बादशाह के दिल को भी नरम करके अल्लाह तआला ने अपनी मदद के सामान पैदा कर दिए।

फिर मुख़ालिफ़त के अन्जाम और अल्लाह तआला की मदद की एक घटना बयान करते हुए बेनिन के ही मुबल्लिग़ लिखते हैं कि मेरे रीज़न में 2 बड़े रेडियो स्टेशन के द्वारा जमाअती तब्लीग़ का साप्ताहिक सिलसिला जारी है और क्षेत्र की एक बड़ी जनसंख्या तक अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत का पैग़ाम पहुँच रहा है। एक रेडियो स्टेशन से हर बुधवार 30 मिनट जमाअत का प्रोग्राम प्रसारित होता था। लेकिन उस रेडियो चैनल का सब-डायरेक्टर हमारी मुख़ालिफ़त किया करता था और हमारे प्रोग्रामों में रोक पैदा करने की कोशिश किया करता था। अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि वह उसी रेडियो स्टेशन में रेडियो के भ्रष्टाचार के इल्ज़ाम में नौकरी से निकाल दिया गया और अदालत ने उसे क़ैद की सज़ा सुनाई और जो नए सब-डायरेक्टर बने उन्हें हमने मिशन आने की दावत दी और उन्हें जमाअती और इस्लामी अक़ीदों के बारे में बताया और कुछ लिट्रेचर भी पढ़ने को दिया और अपनी तब्लीग़ का मक़सद बताया। इसके बाद वह कुछ दिनों तक हमारे तब्लीग़ी प्रोग्राम सुनते रहे। कुछ समय के बाद जब उनसे पुन: मुलाक़ात हुई तो वह कहने लगे कि मैं आपकी तब्लीग़ से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आपकी तब्लीग़ का अन्दाज़ बहुत दिलकश है। मैं आपको इसी ख़र्च में जो आप एक प्रोग्राम के लिए अदा कर रहे हैं एक और हफ़्तावार प्रोग्राम का स्थायी तौर पर नि:शुल्क समय देता हूँ ताकि लोगों को सच्ची धार्मिक शिक्षा मिल सके और इस्लाम के बारे में फैले हुए ग़लत अक़ीदे दूर हों। कहाँ प्रोग्राम को जारी रखने की चिन्ता थी और कहाँ अल्लाह तआला ने ऐसी कृपा की कि उसी ख़र्च में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और इस्लाम का वास्तविक पैग़ाम पहुँचाने का हमें और ज़्यादा समय मिल गया। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला की मदद का जो वादा है उसके हर जगह नज़ारे देखने को मिलते हैं।

फिर अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़ुद दिलों के खोलने की एक और घटना प्रस्तुत करता हूँ। मिस्र के एक दोस्त अहमद साहिब कहते हैं कि इस्लाम सही और आसान व्याख्या करने में मैं आप लोगों को दाद देता हूँ। आप जो पेश करते हैं वही रहमतुल् लिल् आलमींन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का असली इस्लाम है। हम लोग दायस और उसके व्यवहार से थक चुके हैं। काश कि हम तमाम् लोगों की सोचें आप जैसी हो जाएँ। कहते हैं कि मैंने प्रोग्राम में बताए गए नियमानुसार दो रकात इस्तिख़ारा की नमाज़ पढ़ी तो उसी रात स्वप्न में देखा कि मेरे घर के सामने से सारे मकान हट रहे हैं यहाँ तक कि मेरे घर के सामने ख़ाली जगह बन गयी। फिर मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के घर को देखा जिसे आप अक्सर अपने प्रोग्रामों की पिछली स्क्रीन पर क़ादियान के दारुल मसीह का इलाक़ा दिखाते रहते हैं। कहते हैं कि मैंने स्वप्न में इस घर को अर्थात् दारुल मसीह के इलाक़े को ज़मीन से पौधे की तरह निकलते हुए देखा। मैं हैरान था कि यह किस तरह निकल रहा है। फिर मैंने उससे नूर को निकलते हुए देखा और लोगों को कहते हुए सुना कि चाँद दिन में निकला है। मैंने अपने पीछे देखा कि सूरज भी निकला हुआ था। मैंने उनसे कहा कि सूरज और चाँद दोनों निकले हुए हैं। मैं बहुत ख़ुश हुआ क्योंकि पहली बार मैंने इस्तिख़ारा किया और अल्लाह तआला से जवाब पाया। यद्यपि मैं पहले से मुसलमान था लेकिन मैं पहली बार अल्लाह का क़ुर्ब पा रहा हूँ और यह केवल जमाअत अहमदिया की वजह से है। मैं आप लोगों का शुक्रगुज़ार हूँ।

क़बूल-ए-अहमदियत के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से दिल खोलने की एक और घटना सीरिया के एक मित्र अहमद दरवेश साहिब की है। वह कहते हैं कि मैं मुसलमान तो था लेकिन दीन से दूर था। सन् 2008 ई. में मेरे भाई ने अहमदियत क़बूल कर ली, दीन से दूरी के बावजूद मुझे भाई के इस क़दम पर बड़ा ग़ुस्सा आया। मैं अपने भाई से बहुत बहस करता और अक्सर उससे उलझ जाता। अन्तत: मेरे भाई मुझसे अलग हो गए और मुझसे बचने लगे। कहते हैं कि सन् 2011 ई. में सीरिया के हालात ख़राब हुए तो मैं सीरियाई सरकार के विरोधी गुट में शामिल हो गया। उस दौरान सीरिया में पायी जाने वाली तमाम् दीनी जमाअतों को मुझे क़रीब से देखने का मौक़ा मिला और मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि उनमें से हर फ़िर्क़ा दूसरे को काफ़िर कहता है और हर एक के अक़ीदों में निराधार बातें शामिल हैं। कहते हैं कि हालात ख़राब होने के कारण हम ख़ानदान के सारे लोग हलब शहर के आस-पास चले गए। इस अवधि में मुझे दोबारा अपने भाई के साथ धार्मिक विषयों पर बहस करने का मौक़ा मिल गया। लेकिन मैं जब भी उससे किसी मसले के बारे में प्रश्न पूछता तो उसका जवाब मुझे हैरान कर देता और मैं दिल में यह कहने को मज़बूर हो जाता कि वास्तव में इस मसले का यही उचित जवाब है जो मेरा अहमदी भाई देता है। लेकिन कड़ी मुख़ालिफ़त करने के कारण मैं हक़ बात न कह पाता था। कहते हैं कि हमारी बातचीत चलते-चलते वफ़ात-ए-मसीह के विषय तक आ पहुँची। यह पहला मौक़ा था कि मैंने अपने भाई से जमाअत की किताबों में से कुछ किताबें माँगी। कहते हैं कि इस बातचीत के बाद उसने कहा कि सारी किताबें उसी घर में हैं जिसे हम बमबारी के ड़र से छोड़कर यहाँ आ गए हैं। मैंने कहा अगर किताबें वहाँ हैं तो मैं यह ख़तरा मोल ले लेता हूँ। कहते हैं कि मैं उसी क्षण बमबारी, दहशतगर्दी और मार-काट से भरे हुए इलाक़े में गया और वे किताबें ले आया। वापिस आकर मैंने उन किताबों को पढ़ना शुरू कर दिया तो दिल से अहमदी हो गया और इस बारे में अपने भाई को भी बता दिया। लेकिन देश में गृहयुद्ध छिड़े होने के कारण मैं लिखित रूप से बैअत का पत्र न भेज सका। कहते हैं पहले तो मैं सीरियाई सरकार के विरोधी गुट के साथ मिलकर सरकार विरोधी कामों में लगा था। लेकिन अहमदियत क़बूल करने का निर्णय लेने के बाद जब मैंने ख़लीफ़तुल मसीह के इस बारे में ख़ुत्बात सुने तो तुरन्त सरकार विरोधी सरगर्मियों को छोड़ दिया। कहते हैं कि मेरे पिता जी मेरे बैअत करने पर बहुत नाराज़ हुए और एक दिन क्रोधित होकर कहा कि यहाँ से दफ़ा हो जाओ ख़ुदा मुझे तुम्हारा मुँह न दिखाए और कभी तुम्हें लौटाकर मेरे पास न लाए। कहते हैं पिताजी के उन शब्दों की मेरे ईमान के सामने कोई क़ीमत न थी और ख़ुदा के फ़ज़्ल से मैं उसके भावनात्मक असर से बचा रहा और फिर हिजरत करके तुर्की आ गया और यहाँ आकर मैंने पहला काम यह किया कि बैअत फ़ार्म भरकर आपको भेज दिया।

अल्लाह तआला किस तरह से मुख़ालिफ़ीन के हीलों को तोड़कर लोगों के दिलों को खोलने का सामान करता है, इसकी एक घटना मराकश के एक मित्र अब्दुल करीम की है। वह कहते हैं कि मैं तहक़ीक़ के बाद इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि जमाअत अहमदिया, एक इलाही जमाअत है। लेकिन एक इल्ज़ाम का जवाब तलाश करते हुए मुझे जमाअत की अरबी वेबसाइट में मिनहाजुत् तालेबीन नामक एक किताब मिल गयी। उस किताब की विषय-सूची पढ़ते ही मेरे दिल में उसके पढ़ने का शौक़ पैदा हो गया। उस किताब के शुरू में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने उन लोगों के ऐतराज़ों का जवाब दिया है जिन्होंने आपके बारे में यह कहा था कि हज़रत मुस्लेह मौऊद ख़ाली बैठे रहते हैं। इसके जवाब में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपनी प्रतिदिन की जो दिनचर्या बयान की है कि मैं सुबह से उठकर शाम तक क्या करता हूँ। यह लिखने वाले मराकशी साहिब कहते हैं कि मैं एक तरफ़ उसे पढ़ता जा रहा था और दूसरी तरफ़ मेरे दिमाग़ में तफ़्सीर कबीर घूम रही थी और

मैं सोच रहा था कि जिसका प्रतिदिन का प्रोग्राम इतने असाधारण कामों से भरा हो वह तफ़्सीर कबीर जैसा गहरा इल्मी और तहक़ीक़ी काम किस तरह कर सकता है। कहते हैं कि मैंने सोचा कि मान लो अगर मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम झूठे थे तो उन्होंने अपने बेटे को इस तरह के परिश्रम में क्यों डाला। अगर मिर्ज़ा साहिब झूठे थे तो उनका बेटा क्यों दिन-रात इस्लाम की तरक़्क़ी के लिए क़ुर्आन करीम के ख़ज़ाने निकाल-निकाल कर दुनिया के सामने पेश करने में इस तरह तन मन धन से लगा हुआ है कि इस जिहाद में न उसे अपनी परवाह है और न अपने बीवी-बच्चों की और न उसे अपनी सेहत की फ़िक्र है। कहते हैं कि मैं अभी यह सोच ही रहा था कि मेरे दिमाग़ में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वह पेशगोई आ गयी जिसमें आपने फ़रमाया था कि जब आने वाला मसीह आएगा तो वह शादी करेगा और उसकी उच्चकोटि की सन्तान होगी। जब मैने इस पेशगोई पर ग़ौर किया तो मेरा दिल ऐसे जज़्बात से भर गया कि उनके बयान करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मुझे विश्वास हो गया कि यही वह शूरवीर प्रतापी पुत्र है जिसके द्वारा क़ुर्आन मजीद की बुद्धि और विवेकसंगत शिक्षा फैलायी गयी और उसकी तफ़्सीर कबीर जैसी महान और अद्वितीय तफ़्सीर लोगों के सामने आयी। मिनहाजुत् तालेबीन के इस हिस्से को पढ़ने से बैअत के रास्ते की रुकावटें दूर हो गयीं और मैं पूरी सूझ-बूझ के साथ बैअत के लिए तैयार हो गया। देखें अल्लाह तआला भी अजीब-अजीब तरीक़ों से रास्ते खोलता है।

फिर रोअया (स्वप्न) के द्वारा अल्लाह तआला किस तरह मार्गदर्शन करता है। इस बारे में यमन की एक महिला ईमान साहिबा कहती हैं कि मुझे बचपन से ही इमाम महदी के ज़माने तक ज़िन्दा रहने की ख़्वाहिश थी और इसके लिए दुआ किया करती थी। एक दिन मैं एक अरबी चैनल देख रही थी कि उस पर एक दीनी प्रोग्राम में एक मशहूर मौलवी से किसी ने जमाअत अहमदिया का नाम लिए बग़ैर पूछा कि उसका दावा है कि इमाम महदी आ चुके हैं और उनके बाद ख़िलाफ़त क़ायम हो चुकी है। मौलवी साहिब ने जवाब दिया कि ये लोग झूठी बातों के शिकार हैं, झूठे लोग हैं। इसलिए इन चक्करों में पड़ने के बजाय आप अपनी रोज़ की तरह ज़िन्दगी गुज़ारें, क्योंकि जब इमाम महदी आएगा तो सबको पता चल जाएगा, उनको ढूँढ़ने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। कहती हैं कि यह बात मेरे दिल और दिमाग़ में अटक गयी। फिर एक दिन सन् 2009 ई. मेरे छोटे भाई ने मुझे बताया कि उसने एक चैनल देखा है जिसमें कुछ लोग इमाम महदी के ज़ाहिर होने का ऐलान कर रहे थे। यह सुनते ही मुझे उपरोक्त मौलवी साहिब से पूछा गया सवाल और उनका जवाब याद आ गया और मैं समझ गयी कि वस्तुत: वह सवाल इमाम महदी के ज़ाहिर होने का ऐलान करने वाली इस जमाअत के बारे में था। कहती हैं कि मैंने अपने भाई से उस चैनल की फ्रिक्वैन्सी ली और जब यह चैनल लगाया तो उसमें उस समय अल् हवारुल् मुबाशिर प्रोग्राम चल रहा था। मैंने उस प्रोग्राम के वक्ताओं को एक-एक करके बड़ी गहरी नज़र से देखा, उनके चेहरों पर अजीब चमक और नूर था। लेकिन मुझे उन पर तरस आया कि इतने समझदार होने के बावजूद ये लोग रास्ता भटक गए हैं और मैंने सोचा कि आज तो हमें एकता की ज़रूरत है लेकिन इन्होंने आकर एक और फ़िर्क़ा बना लिया है क्या इस्लाम में इससे पहले कम फ़िर्क़े थे। इस एहसास के बावजूद जब मैंने उनकी बातें सुनीं तो वे मेरे दिल को भायीं। एक तरफ़ यह एहसास कि एक नया फ़िर्क़ा बना दिया और दूसरी तरफ़ बातें भी अच्छी लग रही थीं। कहती हैं कि प्रोग्राम ख़त्म होने पर एक क़सीदा पेश किया गया, जिसके बारे में यह लिखा गया कि यह हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का लिखा हुआ है। उस क़सीदे के दोहे और उनका असर असाधारण था। मैं अपने पति के साथ इस चैनल को देखने लगी। हर रोज़ इस चैनल के साथ हमारा लगाव बढ़ता गया। यहाँ तक कि थोड़े दिनों में ही हमारे घर में दूसरे सारे चैनल बन्द हो गए और केवल M. T. A.चलने लगा और हमारे घर का हर सदस्य इस चैनल पर बयान होने वाली बातों को पसन्द करने लगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बातों का प्रभाव ही कुछ अजीब था। आपका क़सीदा सुनने के दौरान मेरी आँखों से आँसू गिरने लगते क्योंकि ये शब्द ख़ुदा की तरफ़ से आने वाले ही किसी के मुँह से निकल सकते हैं। किसी साधारण व्यक्ति के बस की बात नहीं कि ऐसी असरकारक और अलंकारिक बात कह सके। कहती हैं कि तमाम् बातों पर इत्मीनान् कर लेने के बाद मैंने जनवरी 2010 ई. में बैअत का ख़त लिख दिया और मेरे पति ने इन्टरनेट कैफे से कई बार ख़त भेजने की कोशिश की, लेकिन सफल न हुए। कहती हैं कि उस समय मुझे अपने बचपन के ज़माने का एक रोअया (स्वप्न) याद आ गया और वह यह था कि एक रेगिस्तान में मुझे अपने सामने एक बहुत बड़ी परछाईं नज़र आती है जिसके बारे में स्वप्न में ही यह पता चलता है कि यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की परछाईं है और वह मेरी तरफ़ हाथ बढ़ाती है जिसे पकड़ने के लिए मैं दौड़ती हूँ उसी आपाधापी में कभी गिरती हूँ और फिर उठकर दौड़ना शुरू कर देती हूँ, ऐसे में मेरी आँख खुल जाती है। फिर कहती हैं कि मेरा ख़याल है कि उस स्वप्न में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की परछाईं से तात्पर्य हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम थे जो प्रतिरूपी तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विशेषताओं का प्रतिविम्ब हैं और प्रतिरूपी नबी हैं और यह अल्लाह तआला की कृपा है कि उसने स्वप्न के द्वारा मुझे आपका हाथ थामने की तौफ़ीक़ प्रदान की और कई कोशिशों की नाकामी के बाद हम मार्च 2010 में बैअत का ख़त भेजने में कामयाब हो गए। फिर कहती हैं कि जब से बैअत की है ख़ुदा की बरकतें बारिश की तरह नाज़िल हो रही हैं और ख़ुदा के इतने चमत्कार दिखाई देते हैं कि उन सब का बयान करना हमारे सामर्थ्य से बाहर है। नि:सन्देह वह महान चमत्कारों वाला ख़ुदा है, मैंने जब भी दुआ की है उसके क़बूल होने के निशान देखे हैं, हमारा ख़ुदा बड़ा ही मेहरबान है। फिर आगे मुझे लिख रही हैं कि अब आपकी और तमाम् मोमिनों की मुहब्बत मेरे दिल में सबसे ज़्यादा बढ़ गयी है।

अत: अल्लाह तआला शैतानी हमलों की मुख़ालिफ़तों के बावजूद नेक फ़ितरत लोगों की रहनुमाई फ़रमाता रहता है और उनके सीने खोलता है और अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ देता है। ऐसी बहुत सी घटनाएँ सामने आती हैं जब अल्लाह तआला ख़ुद पकड़कर अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है और लोगों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सहायता और समर्थन के नज़ारे दिखाता है। हज़रत

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला ने फ़रमाया था कि ख़ुदा तेरे नाम को उस दिन तक जब कि प्रलय आ जाए इज़्ज़त के साथ क़ायम रखेगा और तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुँचा देगा। फिर फ़रमाया कि जो लोग तेरी ज़िल्लत की फ़िक्र में लगे हुए हैं और तेरे नाकाम रहने की कोशिश करते हैं और तुझे नाबूद करने की सोच रहे हैं वे स्वयं नाकाम रहेंगे और नाकामी व नामुरादी से मरेंगे। फिर अल्लाह तआला ने आपको फ़रमाया कि मैं तेरे सच्चे और दिल से प्रेम करने वाले लोगों के गिरोह को बढ़ाऊँगा और जानों और मालों में बरकत दूँगा और उनको बढ़ाऊँगा और वे मुसलमानों के दूसरे गिरोहों पर क़यामत के दिन तक ग़ालिब रहेंगे अर्थात् मुसलमानों के दूसरे फ़िर्क़े भी रहेंगे लेकिन ग़ल्बा इन्शाअल्लाह जमाअत अहमदिया को हासिल होगा। फ़रमाया जो हसद और जलन करने वालों का गिरोह है वह कौन सा गिरोह है। वह मुसलमानों का दूसरा गिरोह है। ख़ुदा उन्हें नहीं भूलेगा और मोमिन अपनी-अपनी श्रद्धा के अनुसार फल पाएँगे। (आईना कमालाते इस्लाम रूहानी खज़ायन जिल्द 5 पृष्ठ 648)

अत: अल्लाह तआला इसके मुताबिक़ हर दिन जमाअत में सच्चाई और वफ़ादारी के साथ शामिल होने की हर मुख़्लिस और हर अहमदी को तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। जब हम देखते हैं कि अल्लाह तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए हुए अनगिनत वादे पूरे हुए हैं तो कसरत का वादा भी इन्शाअल्लाह पूरा होगा। हासिदों और मुआनिदों पर तो हम दलीलों की दृष्टि से ग़ल्बा पा चुके हैं। उनके पास दलील नहीं है जैसा कि घटनाओं के बयान में अभी आप सुन चुके हैं कि कई लोगों ने यही कहा है। आगे भी इन्शाअल्लाह दलीलों की दृष्टि से हम ही ग़ालिब आएँगे। ज़रूरत है तो इस बात की कि अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को पाने के लिए हम अपनी निष्ठा को बढ़ाएँ ताकि अल्लाह तआला को फ़ज़्लों के वारिस बनने वाले बन सकें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते है:- "क्या वे समझते हैं अर्थात मुख़ालिफ़ कि अपने षड़यन्त्रों से और अपने बेबुनियाद झूठों से और अपनी मनगढ़त बातों से और अने हँसी ठट्ठे से ख़ुदा के इरादे को रोक देंगे या दुनिया को धोखा देकर उसे चक्कर में ड़ाल देंगे। इसका ख़ुदा ने आसमान पर इरादा किया है। अगर पहले कभी हक़ के मुख़ालिफ़ों को कामियाबी हुई है तो कामयाब हो जाएँगे। अगर यह हक़ के मुख़ालिफ़ हैं और पहले कामियाब हुए हैं तो अब भी कामयाब हो जाएँगे। लेकिन अगर यह साबित शुदा है कि जो ख़ुदा के मुख़लिफ़ और उसके इरादे के उलट करते हैं वे हमेशा ज़िल्लत और नाकामी का मुँह देखते हैं। तो फिर इन लोगों के लिए भी एक दिन नाकामी, नामुरादी और रुसवाई मुक़द्दर है। ख़ुदा का फ़रमाया कभी ग़लत नहीं हुआ और न होगा। वह फ़रमाता है: كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ अर्थात् ख़ुदा ने प्रारम्भ से ही यह लिख छोड़ा है और अपना क़ानून ठहरा दिया है कि वह और उसके रसूल हमेशा ग़ालिब रहेंगे। अत: मैं उसका रसूल और फ़रिश्तादा हूँ मगर बिना किसी नई शरीअत और नए दावे और नए नाम के, बल्कि उसी नबी करीम ख़ात्मुल अम्बिया का नाम पाकर और उसी में होकर और उसका द्योतक बनकर आया हूँ। इसलिए मैं कहता हूँ कि जैसा हमेशा से अर्थात् आदम के ज़माने से लेकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक हमेशा इस आयत का अर्थ सच्चा निकलता चला आया है उसी तरह अब भी मेरे हक़ में सच्चा निकलेगा। इन्शाअल्लाह

अनुवादक: अली हसन एम. ए.

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 14 का शेष

*एक अतिथि ने कहा ख़लीफ़तुल मसीह ने आज हमें वह विषय बताए हैं जिनकी आज हम सबको जरूरत है। ख़लीफ़ा ने न केवल धार्मिक बल्कि सांसारिक दृष्टिकोण से भी समाधान बयान किए हैं।

*एक अतिथि ने कहा कि आज हमें वास्तविक इस्लाम का पता चला क्योंकि जिस तरह से आप इस्लाम का ज्ञान रखते हैं और जिस तरह से इस्लामी शिक्षाओं को वर्णन और व्यक्त करते हैं वह दूसरे मुसलमानों में नहीं है।

*एक अतिथि ने हुज़ूर अनवर का खिताब सुनकर कहा: आपके ख़लीफ़ा को दुनिया का लीडर होना चाहिए था।

*एक अतिथि ने कहा आपले ख़लीफ़ा का खिताब बहुत प्रभावशाली और तर्कपूर्ण था। ख़लीफ़ा के संदेश का बहुत महत्व है और इस संदेश को आगे फ़ैलाने की जरूरत है।

*एक अतिथि ने कहा आपकी जमाअत की सफलता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि तुर्क लोग 1960 से यहां हैं लेकिन आज तक मस्जिद नहीं बना सके। लेकिन जमाअत अहमदिया ने इतनी बाधाओं के बावजूद मस्जिद बना ली है। आपकी जमाअत प्रत्येक मामले में ACTIVE मालूम होती है।

*एक अतिथि महिला ने कहा: ख़लीफ़तुल मसीह के शांत, मुबारक चेहरे ने दिल पर बहुत गहरा प्रभाव छोड़ा। आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली है। खासकर आपका तात्कालिक संबोधन करना और दूसरे वक्ताओं की बातों पर विचार व्यक्त करना, बहुत पसंद आया।

*आगस बर्ग के टीवी प्रतिनिधि ने कहा कि ऐसा कार्यक्रम मैंने पहले कभी नहीं देखा। एक धार्मिक प्रमुख और लोगों के प्रभावित चेहरे देखकर बहुत अच्छा लगा।

*एक युवक ने कहा कि वह है तो दहरिया (निरीश्वरवादी) लेकिन अगर उसने किसी धर्म में रुचि ली है तो वह अहमदियों का धर्म है।

*एक जर्मन युवक कहने लगा कि वह यह सुनकर हैरान रह गया कि पाकिस्तान में हमारा विरोध होता है लेकिन हम फिर भी वहाँ मानव कल्याण के काम करते हैं। यह बात स्पष्ट है कि आपकी बात सुनी नहीं जाती क्योंकि मीडिया केवल बुरी ख़बरें देता है।

*एक जर्मन युवक ने अपने विचार ऐसे व्यक्त किए कि मेरा यह सुझाव होगा कि जब ऐसा कार्यक्रम हो तो हमारे स्थानीय नेताओं के बजाय पूरा समय ख़लीफ़तुल मसीह को दें ताकि हम ख़लीफ़तुल मसीह की अधिक से अधिक बातें सुन सकें।

*एक अतिथि पुरुष ने कहा कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत इस्लामी दुनिया में उन लोगों में से है जो एक शांतिपूर्ण इस्लाम की शिक्षा देते हैं और मैं इसलिए यहां आया ताकि उनके माननीय ख़लीफ़तुल मसीह का सीधे भाषण सुन सकूँ। आज का यह समारोह बहुत सुंदर था। मैं इस बात से प्रभावित हुआ हूं कि माननीय ख़लीफ़तुल मसीह किसी भी पल इस बात से नहीं झिझकते कि इस्लाम की वास्तविक और शांतिप्रिय तस्वीर पेश करें। जमाअत अहमदिया एक ऐसा माहौल CREATE करती है जिसमें रहना बहुत भला मालूम होता है और ऐसे लोग फिर समाज में भी बहुत लोकप्रिय होते हैं। हमारा सौभाग्य है कि आज हमारे शहर में जमाअत अहमदिया की मस्जिद का उद्घाटन हुआ है।

*एक अतिथि महिला ने कहा कि मैं इस बात से प्रभावित हूं कि माननीय ख़लीफ़तुल मसीह ने सहिष्णुता और सद्भाव से रहने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया है और यही इस्लाम की मूल शिक्षा है।

(शेष.....)

फरहत अहमद आचार्य

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत के अधिकतर लोगों को यह फ़िक्र रहती है कि किस तरह अपने बच्चों की तरबियत करनी है। हम अहमदियों पर यह अल्लाह तआला का बहुत बड़ा अहसान है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की वजह से इस ज़माने में जबकि सांसारिक इच्छाओं ने हर एक को घेर रखा है, हमारी सोचें यह हैं कि हम अपनी औलाद के लिए केवल दुनिया की फ़िक्र नहीं करते बल्कि दीन की बेहतरी का भी ख़याल पैदा होता रहता है। क़ुर्आन करीम ने कई जगहों पर बच्चों के जन्म से पहले से लेकर जब तरबियत के अलग-अलग मरहलों में से बच्चा गुज़रता है तो उसके लिए दुआएँ भी सिखायी हैं और तरबियत का तरीक़ा भी बताया है और माँ-बाप की ज़िम्मेदारियों की ओर भी ध्यान दिलाया है। अगर हम ये दुआएँ करने वाले और इस ढंग से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने वाले और अपने बच्चों की तरबियत की ओर ध्यान देने वाले हों तो हम एक नेक नसल आगे भेजने वाले बन सकते हैं।

संतान के नेक होने और ज़माने के दुष्प्रभाव से बचने के लिए आवश्यक है कि संतान की इच्छा और उसके जन्म से पहले भी पति-पत्नी दोनों नेकियों पर चलने वाले हों।

संतान के लिए जब दुआ हो तो अल्लाह तआला के आदेशों का पूर्णतः पालन करना आवश्यक है, तभी दुआ क़बूल होती है।

इसलिए माँ-बाप की भी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि बच्चों के सुधार और उनकी तरबियत और बेहतरी के लिए अल्लाह तआला से हमेशा दुआ माँगते रहें और संतान के लिए अपने आदर्श स्थापित करें। अगर अपने आदर्श उस नसीहत के उलट हैं जो माँ-बाप बच्चों को करते हैं तो फिर सुधार की दुआ में नेक निय्यती शामिल नहीं होती। जब इस तरह का नेक नमूना न हो तो फिर यह शिकवा भी ग़लत है कि हमने अपनी औलाद के लिए बहुत दुआ की थी लेकिन फिर भी वह बिगड़ गयी या हमें आज़माइश में डाल दिया।

वाक़्फ़ीन-ए-नव के माता-पिता को बहुत ज़्यादा ध्यान देना चाहिए कि अपने बच्चों को दीन की ओर ध्यान दिलाएँ।

जो वाक़्फ़ीन-ए-नव हैं वे पहले जमाअत से पूछें कि जमाअत को ज़रूरत है कि नहीं। जमाअत अगर उनको व्यक्तिगत काम करने की अनुमति देती है तो करें अन्यथा उनको शुद्ध रूप से अपने वादे को पूरा करते हुए माँ-बाप के वादे को पूरा करने के लिए अपने आपको वक़्फ़ के लिए प्रस्तुत करना चाहिए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 14 जुलाई 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

बहुत से स्त्री-पुरुष लिखते हैं या मुलाक़ात में ज़बानी कहते हैं कि हमारे यहाँ औलाद होने वाली है उसके लिए दुआ करें या यह कहते हैं कि हमारी पैदा होने वाली संतान के लिए दुआ करें या यह कहते हैं कि हमारे बच्चे जवानी की ओर बढ़ रहे हैं उनकी तरबियत की चिन्ता रहती है उनके लिए क्या दुआ करें? और किस तरह उनकी तरबियत करें कि वे सही रास्ते पर और नेकियों पर क़ायम रहें?

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत के अधिकतर लोगों को यह फ़िक्र रहती है कि किस तरह अपने बच्चों की तरबियत करनी है। हम अहमदियों पर यह अल्लाह तआला का बहुत बड़ा उपकार है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की वजह से इस ज़माने में जबकि सांसारिक इच्छाओं ने हर एक को घेर रखा है, हमारी सोचें यह हैं कि हम अपनी औलाद के लिए केवल दुनिया की फ़िक्र नहीं करते बल्कि दीन की बेहतरी का भी ख़याल पैदा होता रहता है।

अल्लाह तआला ने हम मुसलमानों पर यह भी एहसान किया है लेकिन शर्त यह है कि मुसलमान उस पर ध्यान देते हुए उस पर अमल करने वाले हों कि क़ुर्आन करीम में कई जगहों पर बच्चों की पैदाइश से पहले से लेकर तरबियत के अलग-अलग मरहलों में से बच्चा जब गुज़रता है तो उसके लिए दुआएँ भी सिखायी हैं और तरबियत का ढंग भी बताया है और माँ-बाप की ज़िमेमेदारियों की ओर भी ध्यान दिलाया है। अगर हम ये दुआएँ करने वाले और इस ढंग से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने वाले और अपने बच्चों की तरबियत की ओर ध्यान देने वाले हों तो आगे एक नेक नस्ल पैदा करने वाले बन सकते हैं।

इस बात में कोई सन्देह नहीं कि बच्चों की तरबियत कोई आसान काम नहीं और विशेष रूप से इस ज़माने में जब क़दम-क़दम पर शैतान की पैदा की हुई दिलचस्पियाँ भिन्न-भिन्न रूपों में प्रतिदिन हमारे सामने आ रही हों। लेकिन अल्लाह तआला ने जब दुआएँ और ढंग बता दिए हैं तो इसलिए कि अगर हम चाहें तो ख़ुद को भी और अपने बच्चों को भी शैतान के हमलों से बचा सकते हैं। लेकिन इसके लिए अनवरत दुआओं और अल्लाह तआला की मदद और मेहनत और कोशिश की आवश्यकता है और एक सच्चे मोमिन से यही उम्मीद की जाती है कि वह अल्लाह तआला के साथ जुड़कर अपने आपको भी और अपनी संतान को भी शैतान के हमलों से बचाये, न कि नाउम्मीद हो जाए या थक कर बैठ जाए या डर कर नकारात्मक सोचों का शिकार हो जाए।

नकारात्मक सोच का एक भयानक उदाहरण पिछले दिनों एक पत्र के द्वारा मेरे सामने आया। जब एक आदमी ने लिखा कि आज की दुनिया में पैसे की दौड़ लगी हुई है अनैतिक सरगर्मियों की इन्तिहा हो गयी है, नशे के नए-नए प्रकार और उनका प्रयोग बढ़ता जा रहा है, समाज में बड़े पैमाने पर दुराचार बढ़ता जा रहा है। लिखने वाला कहता है कि इस कारण से मैंने सोचा कि शादी तो अवश्य करूँ लेकिन बेहतर यही लगता है कि निःसंतान रहूँ। यह बहुत निराशाजनक सोच है मानो शैतान से हार मानकर और उसको सारी ताक़तों का स्रोत समझकर यह बात की जा रही है। मानो कि अल्लाह तआला में कोई ताक़त नहीं कि औलाद की तरबियत के लिए हमारी कोशिशों और दुआओं में बरकत डाले(नऊज़ुबिल्लाह) और हमारी औलाद को और हमें शैतान के हमलों से बचाये हम चाहे जितनी कोशिश और दुआएँ करें। मानों दूसरे शब्दों में हम शैतान के चेलों को खुली छुट्टी देने वाले बन जाएँ और मोमिनों की नस्ल धीरे-धीरे ख़त्म हो जाए। यह सोच बहुत भयानक और निराशाजनक है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने वाले की ऐसी सोच नहीं हो सकती और न होनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दुनिया में जिस इन्क़लाब को पैदा करने के लिए अल्लाह तआला की ओर से भेजे गए उसका हिस्सा बनने के लिए हमने अपनी तमाम् सलाहियतों को इस्तेमाल करना है और अपनी नस्ल में भी इस रूह को फूँकना

है। जो हमारे उद्देश्य हैं उनके लिए दुआएँ भी करनी हैं। उनकी तरबियत भी करनी है कि समाज की इन सब बुराइयों के बावजूद हमने शैतान को कामयाब नहीं होने देना और दुनिया में ख़ुदा तआला का शासन क़ायम करने की कोशिश करना है। इन्शाअल्लाह

इसलिए निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं बल्कि एक दृढ़ संकल्प के साथ अल्लाह तआला के बताए हुए रास्ते पर चलने की आवश्यकता है। अल्लाह तआला ने नेक संतान के लिए क़ुर्आन करीम में हमें दुआएँ सिखायी हैं। जैसा कि मैंने वर्णन किया।

एक जगह हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम के द्वारा यह दुआ सिखायी कि:-

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ (आले इमरान:39)

हे मेरे रब्ब! मुझे अपनी तरफ़ से पवित्र सन्तान प्रदान कर। नि:सन्देह तू बहुत दुआएँ सुनने वाला है। अत: अल्लाह तआला ने स्वयं तुम्हें यह दुआ सिखायी है कि मैं दुआएँ सुनने वाला हूँ। इसलिए तुम भी कहो कि हे अल्लाह! तू दुआ सुनने वाला है इसलिए हमारी दुआएँ क़बूल कर और हमें पवित्र सन्तान प्रदान कर।

अत: जब पवित्र संतान की इच्छा हो तो उसके लिए दुआ भी होनी चाहिए और साथ ही माँ-बाप को भी उन पवित्र विचारों और व्यवहारों का सार्थक रूप होना चाहिए जो सदाचारियों और नबियों की विशेषता होते हैं, हर माँ-बाप को यह तरीक़ा इख़्तियार करने की ज़रूरत है। कई जगहों पर माएँ दीनी बातों की ओर ध्यान दिलाने वाली होती हैं तो बाप नहीं होते और कई जगहों पर बाप होते हैं तो माएँ अपनी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं कर रहीं। संतान के नेक होने और ज़माने की बुराइयों से बचने के लिए यह आवश्यक है कि संतान की इच्छा और उसके जन्म से भी पहले पति-पत्नी दोनों नेकियों पर चलने वाले हों।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा की वाकियात में से एक वृत्तान्त मिलता है जिसमें संतान होने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में एक आदमी के लिए दुआ की दरख़्वास्त की गयी। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उस दुआ को उस आदमी के अपने अन्दर पाक तब्दीली पैदा करने की शर्त के साथ सम्बद्ध कर दिया। वह आदमी अभी अहमदी भी नहीं था। लेकिन शायद उसकी कोई नेकी थी जिसके कारण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसके लिए दुआ की। यह मुंशी अता मुहम्मद साहिब पटवारी हैं। कहते हैं कि मैं ग़ैर अहमदी था, दीन से दूर हटा हुआ था। मेरे एक मित्र मुझे अहमदियत की तब्लीग़ किया करते थे लेकिन मैंने कभी उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। एक दिन उसने मुझे बहुत ज़्यादा इस बारे में कहा और मेरे पीछे पड़ गया कि मेरी बातें सुनो और इन पर ग़ौर करो। मैंने कहा अच्छा, अगर आप यही कहते हैं तो मैं आपको एक दुआ के लिए कहता हूँ, अगर वह सुनी गयी तो फिर मैं ग़ौर करूँगा। आप कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआएँ क़बूल होती हैं तो उनको मेरे लिए दुआ के लिए कहें। मेरी तीन पत्नियाँ हैं, किसी से संतान नहीं है। मैंने एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी शादी की, ताकि औलाद पैदा हो। यह दुआ करें कि मेरे यहाँ बेटा पैदा हो और हो भी पहली पत्नी से। मुंशी साहिब कहते हैं कि यह पत्र मेरे मित्र ने मेरी तरफ़ से लिख दिया। कुछ समय के बाद मौलवी अब्दुल करीम साहिब की ओर से जवाब आया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ की है और फ़रमाया है कि ख़ुदा आपको बेटा प्रदान करेगा, लेकिन शर्त यह है कि आप ज़करिया वाली तौबा करें। मुंशी साहिब कहते हैं कि मैं उन दिनों बहुत बेदीन था, शराबी-कबाबी और रिश्वतखोर हुआ करता था। रिश्वत लेना मेरा बड़ा साधारण काम था। मुझे क्या पता था कि ज़करिया वाली तौबा क्या होती है। कहते हैं कि मैं यह पता करने के लिए मस्जिद में गया कि ज़करिया वाली तौबा क्या है? तो मस्जिद का इमाम मुझे मस्जिद में देखकर हैरान हुआ कि यह शराबी-कबाबी कहाँ से आ गया। बहरहाल जब मैंने उससे पूछा तो वह मेरे सवाल का जवाब न दे सका। मुंशी साहिब कहते हैं कि फिर मैं दूसरे गाँव में मौलवी फ़तहदीन साहिब अहमदी के पास गया और जब उनसे पूछा तो उन्होंने कहा कि ज़करिया वाली तौबा यह है कि बेदीनी छोड़ दो, हलाल खाओ, नमाज़-रोज़ों के पाबन्द हो जाओ और मस्जिद में ज़्यादा आया करो। कहते हैं कि यह सुनकर मैंने ऐसा करना शुरू कर दिया। शराब छोड़ दी, रिश्वत लेना बन्द कर दिया, नमाज़-रोज़े का पाबन्द हो गया। कहते हैं कि चार-पाँच महीने का समय बीता होगा कि एक दिन मेरी बड़ी बीवी रोने लगी। जब उसको दाई से चेक करवाया तो उसने जो कहा वह इस बात का संकेत था कि शायद संतान होने वाली है। बहरहाल उसकी बात सुनकर मैंने उससे कहा कि मैंने मिर्ज़ा साहब से दुआ करायी है। यह औलाद होने की निशानी है, सन्देह वाली कोई बात नहीं। कहते हैं कि कुछ समय के बाद गर्भ के आसार ज़ाहिर होने शुरू हो गए तो मैंने लोगों को बताना शुरू कर दिया कि मेरे यहाँ बेटा पैदा होगा और स्वस्थ और सुन्दर होगा। अत: उनके यहाँ बेटा पैदा हुआ। मुंशी साहिब कहते हैं कि उसके बाद मैंने बैअत कर ली और उस इलाक़े के बहुत से दूसरे लोगों ने भी बैअत की।

(सीरतुल महदी जिल्द-1 पृष्ठ 220-221 रिवायत नं 241 से उद्धृत)

अत: अल्लाह तआला जब किसी का अन्जाम अच्छा करना चाहता है तो इस तरह भी होता है कि औलाद की ख़्वाहिश और उसका होना उसके सुधार और पाक तब्दीली का कारण बन जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी अपनी दुआ की क़बूलियत को उनमें पाक तब्दीली के साथ मश्रूत किया था। इसलिए जहाँ ज़करिया वाली दुआ हम अपनी औलाद के लिए करते हैं वहाँ हमें अपने अन्दर भी पाक तब्दीली पैदा करने की ज़रूरत है।

लेकिन इस सन्दर्भ में मैं यह भी बता देता हूँ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास एक दूसरे आदमी का भी मामला पेश हुआ कि वह कहता है कि मेरे लिए दुआ करें कि बेटा पैदा हो तो मैं अहमदी हो जाऊँगा। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरा दावा मसीह मौऊद होने का है, मैंने यह दावा नहीं किया कि लोगों के यहाँ बच्चे पैदा करवाने के लिए मैं आया हूँ।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-9 पृष्ठ 115 संस्करण 1985 से उद्धृत)

उसके हालात बिल्कुल अलग थे। चूँकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नबी थे और उनकी नज़र उसके बारे में वहाँ तक पहुँची कि यह शर्त ऐसी है कि जो ठोकर खाने का कारण भी बन सकती है। लेकिन यहाँ अल्लाह तआला ने उस आदमी का अन्जाम भी अच्छा करना था और कोई नेकी भी होगी तभी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ करके और अल्लाह तआला से ख़बर पाकर उसको बेटे की ख़बर भी दे दी। यह बात भी याद रखनी चाहिए कि हर चीज़ को हर चीज़ से सशर्त नहीं ठहराया जा सकता। अहमदी होने को दुआ से सशर्त नहीं करना चाहिए। कभी--कभी लोग मुझे भी लिखते हैं कि यह होगा तो हम अहमदी होंगे, तो शर्तें लगाकर अहमदी होना कोई दीन को क़बूल करने वाली बात नहीं है बल्कि यह तो अपनी शर्तें अल्लाह तआला को मनवाना है और अल्लाह तआला किसी की शर्तों पर किसी की हिदायत का सामान पैदा नहीं करता। हिदायत पर चलने की हमें ज़रूरत है न कि अल्लाह तआला को हमारी ज़रूरत है। अत: जहाँ हम अपनी औलाद के लिए दुआ करते हैं वहाँ हमें अपने अन्दर भी पाक तब्दीली पैदा करने की ज़रूरत है।

क़ुर्आन करीम में हज़रत ज़करिया के वर्णन से सूर: अल-अम्बिया में इस दुआ का वर्णन मिलता है कि-

رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِيْنَ (अल-अम्बिया: 90)

हे मेरे रब्ब मुझे अकेला न छोड़ और तू सब वारिसों से बेहतर है। इस दुआ में भी जब अल्लाह तआला को सबसे अच्छा वारिस कहा है तो स्पष्ट है कि औलाद की दुआ केवल इसलिए नहीं कि औलाद पैदा हो जाए और वारिस पैदा हो जाएँ जो दुनयावी मामलात् के वारिस हों, बल्कि अल्लाह तआला की ओर से ऐसे वारिस अता हों जो दीन को दुनिया पर प्रधानता देने वाले हों और स्पष्ट है कि ऐसी दुआ वही माँग सकते हैं जो ख़ुद भी दीन को दुनिया पर प्रधानता देते हैं। अगर इन्सान दुनियादारी में डूबा हुआ है तो नेक वारिस किस तरह माँगेगा। अगर कोई औरत केवल इसलिए औलाद की ख़्वाहिश कर रही है कि औरत का औलाद की इच्छा करना एक स्वाभाविक माँग है या फिर कभी-कभी इसलिए ख़्वाहिश कर रही है कि पति की इच्छा होती है तो ऐसी औलाद फिर कभी-कभी मुसीबत का कारण भी बन जाती है। औलाद की ख़्वाहिश बड़ी जायज़ ख़्वाहिश है लेकिन साथ ही नेक वारिस पैदा होने की भी दुआ करनी चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि औलाद की ख़वाहिश सिर्फ़ वारिस बनाने के लिए न करो, बल्कि नेक, सदाचारी और दीन की ख़िदमत का वारिस बनाने के लिए करो अन्यथा औलाद भी मुसीबत का कारण बन सकती है। एक जगह आप फ़रमाते हैं कि-

"औलाद की आज़माइश भी बहुत बड़ी आज़माइश है। अगर औलाद नेक हो तो फिर किस बात की परवाह हो सकती है। ख़ुदा तआला ख़ुद फ़रमाता है:- وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ (अल आराफ़:197) कि वह स्वयं नेक लोगों का मित्र और पालनहार होता है। (इन्सान) अगर दुराचारी है तो चाहे लाखों रुपया उसके लिए छोड़ जाओ (या संतान दुराचारी है तो चाहे लाखों रुपया उसके लिए छोड़ जाओ) वह बुरे कामों में बर्बाद करके फिर कंगाल हो जाएगी और उन मुसीबतों और परेशानियों में पड़ेगी जो उसके लिए अनिवार्य हैं। जो आदमी अपनी राय को ख़ुदा तआला की

इच्छा और राय से जोड़ता है वह औलाद की ओर से संतुष्ट हो जाता है। (अल्लाह तआला की राय और इच्छा क्या है? यही कि दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करो। अगर यह होगा तो फिर इन्सान औलाद की तरफ़ से संतुष्ट हो जाता है क्योंकि ऐसा इन्सान अपनी औलाद के लिए दुआ भी करता है और उसकी तरबियत की कोशिश भी करता है।) और वह इसी तरह हो सकता है कि उसकी सलाहियत के लिए कोशिश करे और दुआएँ करे। इस दशा में स्वयं अल्लाह तआला उसका पालन-पोषण करेगा और अगर दुराचारी है तो फिर जाए नर्क में। उसकी परवाह तक न करे।"

फिर एक जगह आप इसी औलाद के बारे में नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि- "ख़ुद नेक बनो और अपनी औलाद के लिए नेकी और तक़्वा का एक उत्तम आदर्श बन जाओ और उसको संयमी और दीनदार बनाने के लिए कोशिश और दुआ करो। जितनी कोशिश तुम उनके लिए धन जमा करने की करते हो उतनी ही कोशिश इस विषय में करो" (मल्फ़ूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 109 संस्करण 1985)

औलाद को दीन सिखाने और दीन से जोड़े रखने के लिए उनकी दीनी तरबियत की तरफ़ कम से कम इन्सान की इतनी कोशिश तो हो जितनी दुनियावी कोशिशें होती हैं। दुनिया की तरफ़ ज़्यादा कोशिश होती है और दीन की तरफ़ बहुत कम। इसी कारण से बहुत से लोगों पर मुसीबतें भी आती हैं और मुश्किलों में भी पड़ते हैं।

फिर आप फ़रमाते हैं कि "कई बार धनवान् लोगों को यह कहते हुए सुना है कि कोई औलाद हो जाए जो इस जायदाद की वारिस हो" मानो औलाद की चाहत केवल जायदाद के लिए है "ताकि जायदाद दूसरों के हाथ में न चली जाए। मगर वे नहीं जानते कि जब मर गये तो साझीदार कौन और औलाद कौन?" सभी ग़ैर बन जाते हैं "औलाद के लिए अगर ख़्वाहिश हो तो इस उद्देश्य से हो कि वह दीन की सेवक हो। (मल्फ़ूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 110 संस्करण 1985 से उद्धृत)

फिर अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन मजीद में हमें यह भी दुआ सिखाई है कि-

وَاَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ (अल अहक़ाफ:16)

कि मेरे लिए मेरी सन्तान का भी सुधार कर दे, नि:सन्देह मैं तेरी ओर अपना ध्यान फेरता हूँ और नि:सन्देह मैं आज्ञापालन करने वालों में से हूँ। यहाँ औलाद के सुधार की दुआ की है तो साथ इस बात का भी इक़रार किया है कि मैं तेरी तरफ़ झुकने वालों और आज्ञापालन करने वालों में से हूँ।

इसलिए जब औलाद के लिए दुआ हो तो अल्लाह तआला के आदेशों पर अमल और उसकी पूरी आज्ञापालन आवश्यक है, तभी दुआ क़बूल होती है। अत: माँ-बाप दोनों की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि बच्चों के सुधार और उनकी तरबियत और बेहतरी के लिए अल्लाह तआला से हमेशा दुआ माँगते रहें और उनके लिए अपने श्रेष्ठ आदर्श स्थापित करें। अगर आपके आदर्श उस शिक्षा के उलट हैं जो अल्लाह तआला ने दी है और आपके आदर्श उस नसीहत के विपरीत हैं जो आप अपने बच्चों को करते हैं तो फिर समझ लो कि सुधार की दुआ में नेकनीयती शामिल नहीं। जब इस तरह का व्यवहारिक आदर्श न हो तो फिर यह शिकवा भी ग़लत है कि हमने अपनी औलाद के लिए बहुत दुआ की थी लेकिन वह फिर भी बिगड़ गयी या हमें मुसीबत में डाल दिया।

फिर अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में एक बड़ी व्यापक दुआ बयान फ़रमाता है कि जो शैतान के हमलों से बचना चाहते हैं और रहमान ख़ुदा के बन्दे बनना चाहते हैं उनकी जो विशेषताएँ हैं उनमें से एक यह है कि वे यह दुआ करते हैं कि-

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا (अल फ़ुर्क़ान:75)

हे हमारे रब्ब! हमें अपने जीवन साथियों और अपनी औलाद की ओर से आँखों की ठंडक प्रदान कर और हमें संयमियों (सदाचारियों) का इमाम बना दे। औलाद के लिए यह दुआ पति-पत्नी दोनों को करनी चाहिए। जब पति-पत्नी दोनों नेक संतान की चाहत रखते हुए दुआ करते हैं तो फिर उसके पैदा के बाद उनकी ज़िम्मेदारियाँ और काम समाप्त नहीं हो जाते, बल्कि माँ, बाप, पति, पत्नी सब अपने-अपने दायरे में निगरान और इमाम हैं और यह हक़ उसी समय अदा होगा जब ख़ुद भी तक़्वा पर चलने के साथ-साथ बच्चों के लिए दुआ करने वाले होंगे और अपने कर्मों पर भी नज़र रखने वाले होंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस आयत के हवाले से बड़े विस्तार से बयान फ़रमाया है कि "निकाह (शादी) से एक और उद्देश्य भी है जिसकी तरफ़ क़ुर्आन करीम की सूर: अल् फ़ुर्क़ान में इशारा है और वह यह है कि-

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا

मोमिन वे हैं जो यह दुआ करते हैं कि हे हमारे ख़ुदा! हमें अपनी पत्नियों के बारे में और बेटों के बारे में दिल की ठंडक प्रदान कर और ऐसा कर कि हमारी पत्नियाँ और हमारे बेटे नेक और सदाचारी हों और हम उनके इमाम हों।"

(आर्य: धर्म, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 10 पृष्ठ 23)

अत: आपने यहाँ माँ-बाप को भी इस दुआ के साथ अपने अमल दिखाने की हिदायत फ़रमा दी है कि हम उनके इमाम हों। इमाम होने का अर्थ ही यह है कि हम व्यवहारिक आदर्श स्थापित करने वाले बनें। अत: क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला बार-बार हर दुआ के साथ इस बात को दोहराता और फरमाता है कि अगर तुम्हें नेक औलाद की चाहत है तो अपने कर्मों पर नज़र रखो।

फिर इस बात के सन्दर्भ में कि औलाद की ख़्वाहिश क्यों होती है और क्यों होनी चाहिए और मनुष्य की पैदाइश का जो उद्देश्य है उसको भी औलाद की ख़्वाहिश के साथ-साथ सामने रखना चाहिए या औलाद की पैदाइश के समय भी सामने रखना चाहिए और अपने कर्मों पर भी नज़र रखनी चाहिए, अपने सुधार की भी फ़िक्र होनी चाहिए ताकि औलाद भी नेक और सदाचारी हो, न कि केवल दौलत और राज-पाट का वारिस बनाने के लिए औलाद पैदा की जाए। यह दुआ किस तरह और किस तर्तीब से करनी चाहिए इन सब बातों की व्याख्या करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:-

"इन्सान को सोचना चाहिए कि उसे औलाद की इच्छा क्यों होती है? क्योंकि उसको केवल स्वाभाविक चाहत ही तक सीमित न कर देना चाहिए कि जैसे प्यास लगती है या भूख लगती है। लेकिन जब यह एक ख़ास अन्दाज़े से गुज़र जाए तो इसके सुधार की ज़रूर फ़िक्र करनी चाहिए। ख़ुदा तआला ने इन्सान को अपनी इबादत के लिए पैदा किया है जैसा कि फ़रमाया है:-

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (अज्ज़ारियात:57)

अब अगर इन्सान ख़ुद मोमिन और इबादतगुज़ार नहीं बनता और अपने जीवन के असल उद्देश्य को पूरा नहीं करता और इबादत का पूरा हक़ अदा नहीं करता बल्कि दुराचार में जीवन व्यतीत करता है और गुनाह पर गुनाह करता है तो ऐसे आदमी की औलाद के लिए चाहत क्या परिणाम लाएगी। सिर्फ यही कि गुनाह करने के लिए वह अपना एक और वारिस छोड़ना चाहता है, ख़ुद कौन सी कमी की है जो औलाद की ख़्वाहिश करता है। इसलिए जब तक औलाद की ख़्वाहिश केवल इस उद्देश्य के लिए न हो कि वह दीनदार और संयमी हो और ख़ुदा तआला की आज्ञापालक होकर उसके धर्म का सेवक बने बिल्कुल व्यर्थ है, बल्कि एक प्रकार की नाफ़रमानी और गुनाह है और उसका नाम नेक नस्ल छोड़ने के बजाय बुरी नस्ल छोड़ने वाला रखना जायज़ होगा।" (अर्थात् जो औलाद पीछे छोड़ जाएँगे वह नेक और सदाचारी नहीं होगी बल्कि वे बुराइयाँ करने वाली चीज़ पीछे छोड़ जाएँगे) लेकिन अगर कोई आदमी यह कहे कि मैं नेक और ख़ुदातर्स और ख़ादिम-ए-दीन औलाद की ख़्वाहिश करता हूँ तो उसका यह कहना भी निरा एक दावा ही दावा होगा जब तक कि वह ख़ुद अपनी हालत में एक सुधार न पैदा करे, अर्थात् ख़्वाहिश तो नेक औलाद की हो लेकिन ख़ुद अपने कर्म उसके उलट हों। बहुत सारे लोग आते हैं और कहते हैं कि दुआ करें कि नेक औलाद हो, लेकिन उनकी अपनी नमाज़ों के बारे में उनका यही जवाब होता है कि कोशिश करते हैं कि पूरी नमाज़ें पढ़ें। जिन्होंने फ़र्ज़ नमाज़ें भी नहीं पढ़ना उनकी नेकी की क्या हालत हो सकती है) आप फ़रमाते हैं कि "अगर ख़ुद दुराचार की ज़िन्दगी बिता रहा है और मुँह से कहता है कि मैं नेक और सदाचारी औलाद की ख़्वाहिश करता हूँ तो वह अपने इस दावे में झूठा है।" नेक और सदाचारी संतान की ख़्वाहिश से पहले आवश्यक है कि वह स्वयं अपना सुधार करे और अपने जीवन को संयमी जीवन बनाए तब उसकी ऐसी इच्छा एक उपयोगी इच्छा होगी और ऐसी औलाद वास्तव में इस योग्य होगी कि उसे बाकियात सालिहात का मिसदाक़ कहें। लेकिन अगर यह इच्छा केवल इसलिए है कि हमारा नाम शेष रहे और वह हमारी संपत्ति और सामान की वारिस हो या वह बड़ी शानदार और प्रसिद्ध हो इस प्रकार की इच्छा" (आप फरमाते हैं) "मेरे नज़दीक शिर्क है।'

फिर इसको आगे बढ़ाते हुए आपने फ़रमाया कि "एक और बात है कि औलाद की इच्छा तो लोग बड़ी करते हैं और औलाद होती भी है लेकिन यह कभी नहीं देखा गया कि वह औलाद की प्रशिक्षण और उन्हें उत्कृष्ट और नेक चलन बनाने और ख़ुदा तआला के आज्ञाकारी बनाने की कोशिश और चिंता करें। न कभी उनके लिए दुआ करते हैं और न तरबियत के मरतबों का ख़याल रखते हैं।" दुआ की और भी बहुत कम तवज्जो है। तरबियत की ओर जो ध्यान होना चाहिए वह नहीं है।) फ़रमाया कि "मेरी अपनी तो यह हालत है, अपने बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

फ़रमाते हैं कि "मेरी अपनी तो यह हालत है कि मेरी कोई नमाज़ ऐसी नहीं जिसमें मैं अपने दोस्तों और बच्चों और पत्नी के लिए दुआ नहीं करता। कई माता पिता ऐसे हैं जो अपने बच्चों को बुरी आदतें सिखा देते हैं। शुरुआत में जब वह बुराई करना सीखने लगते हैं तो उन्हें नसीहत नहीं करते। परिणाम यह होता है कि वे दिन प्रति दिन साहसी और बेबाक होते जाते हैं। अगर औलाद को शुरू में नहीं रोकेंगे, उन्हें नहीं समझाएंगे। शुरुआत में प्यार से भी समझाया जाता है तो धीरे-धीरे वह बुराइयों में बढ़ती चली जाती है।

फिर एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "लोग औलाद की इच्छा तो करते हैं मगर इसलिए नहीं कि वह ख़ादिम-ए-दीन हो बल्कि इसलिए कि दुनिया में उनका कोई वारिस हो और जब औलाद होती है तो उसकी तरबियत की चिंता नहीं की जाती। न उसके अक़ीदों की इस्लाह की जाती है।" (दीन सिखाना भी ज़रूरी है। यह नहीं है कि बाहर से समय नहीं मिला। सांसारिक पढ़ाई में व्यस्त हैं, सांसारिक कार्यों में व्यस्त हैं इसलिए न ही स्वयं दीन सिखाने की ओर ध्यान दिया और न बच्चों के लिए कोई व्यवस्था की। अक़ीदे सिखाना, दीन सिखाना बहुत ज़रूरी है) फ़रमाया "और न अखलाक़ी हालत को ठीक किया जाता है। "अब अखलाक़ के भी मियार हैं। यहाँ अखलाक़ के मियार कुछ और हैं। क़ुरआन में अल्लाह तआला ने जो दीन में अखलाक़ी मियार सिखाए हैं वे बहुत उत्तम मियार हैं। केवल सांसारिक अखलाक़ी मियार नहीं बल्कि वह अखलाक़ी मियार हमें खोजने चाहिए जो अल्लाह तआला ने हमें सिखाए हैं, जो इस्लाम हमें सिखाता है, जिन्हें आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने आदर्श से साबित करके हमें दिखाया है। और वह अखलाक़ी मियार हैं जो हमने आगे अपनी पीढ़ियों में स्थापित करने हैं।

आपने फ़रमाया कि: "याद रखो कि उसका ईमान सही नहीं हो सकता जो क़रीबी संबंधों को नहीं समझता। जब वह इस में असमर्थ है तो और नेकियों की उम्मीद उससे क्या हो सकती है। फरमाया कि "अल्लाह तआला ने औलाद की इच्छा को इस प्रकार कुरआन में उल्लेख किया है-

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا (अल्फुर्क़ान-75)

यानी ख़ुदा तआला हमें हमारे पत्नियों और बच्चों से आंखों की ठंडक प्रदान करे और यह तब ही मिल सकती है कि वे फिस्क़ और फुजूर का जीवन व्यतीत न करते हों बल्कि इबादुर रहमान का जीवन बसर करने वाले हैं और ख़ुदा को प्रत्येक चीज़ पर प्राथमिकता देने वाले हों। और आगे खोलकर कह दिया 'व जअलना लिल मुत्तक़ीन इमामा'। औलाद अगर नेक और संयमी हो तो यह उनका इमाम ही होगा। इससे मानो संयमी होने की भी दुआ है।" (मल्फूज़ात जिल्द 2 पृष्ठ 370 -373, संस्करण 1985 मुद्रित इंग्लैंड) यानी स्वयं के संयमी होने के लिए दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला हमें तक़वा (संयम) पर चलने वाला बनाए और आगे फिर औलाद के भी संयमी होने की दुआ है।

फिर आप फरमाते हैं कि औलाद की परवरिश "केवल दया के आधार पर करे, न कि उत्तराधिकारी बनाने के लिये। बल्कि 'व जअलना लिल मुत्तक़ीन इमामा' का लिहाज़ हो कि औलाद दीन की ख़ादिम हो"। आप फरमाते हैं: "लेकिन कितने हैं जो बच्चों के लिये यह दुआ करते हैं कि बच्चे दीन के पहलवान हों। बहुत थोड़े होंगे जो ऐसा करते हैं। अक्सर तो ऐसे हैं कि वह बिल्कुल अनजान हैं कि वे क्यों बच्चों के लिए यह प्रयास करते हैं और अक्सर हैं जो केवल उत्तराधिकारी बनाने के लिये। और कोई उद्देश्य होता ही नहीं। केवल यह इच्छा होती है कि कोई साथी या गैर उनकी संपत्ति का मालिक न बन जाए। लेकिन याद रखें कि इस तरह से धर्म बिल्कुल बर्बाद हो जाता है। अत: औलाद के लिये केवल यह इच्छा हो कि वह दीन की ख़ादिम हो। " (मल्फूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 381 -382, संस्करण 1985 मुद्रित इंग्लैंड) और विशेष रूप से वाकिफीन-ए-नौ के माता पिता को बहुत अधिक ध्यान देना चाहिए कि अपने बच्चों को दीन की ओर ध्यान दिलाएं।

फिर आप फरमाते हैं कि मैं देखता हूँ कि लोग जो कुछ करते हैं वह केवल दुनिया के लिए करते हैं। मुहब्बत दुनिया उनसे कराती है। ख़ुदा के लिये नहीं करते। अगर औलाद की इच्छा करे तो इस इरादे से करे 'व जअलना लिल मुत्तक़ीन इमामा' पर नज़र करके करे कि कोई ऐसा बच्चा पैदा हो जाए जो इस्लाम के नाम को बुलंद करने का माध्यम हो। जब ऐसी शुद्ध इच्छा हो तो अल्लाह तआला क़ादिर (सामर्थ्यवान) है कि ज़करिया की तरह औलाद दे दे। मगर मैं देखता हूँ कि लोगों की नज़र इससे आगे नहीं जाती कि हमारा बाग़ है या और जायदाद है, वह उसका वारिस हो और अन्य साथी उसे न ले जाए। लेकिन वह इतना नहीं सोचते कि कमबख़्त जब तू मर गया तो तेरे लिए दोस्त, दुश्मन, अपने, बेगाने सब बराबर हैं। फरमाते हैं कि मैंने बहुत से लोग ऐसे देखे और कहते सुने हैं कि दुआ करो कि औलाद हो जाए जो इस संपत्ति की वारिस हो। ऐसा न हो कि मरने के बाद कोई साथी ले जावे। औलाद हो, चाहे वह बदमाश ही हो। यह मा'रिफत इस्लाम की रह गई है। (मल्फूज़ात जिल्द 6 पृष्ठ 351 -352, संस्करण 1985 मुद्रित इंग्लैंड)

सामान्य मुसलमानों में तो यह बड़ा आम है और इसी वजह से विशेष रूप से लड़कों के जन्म के लिए बड़ा ध्यान दिया जाता है कि लड़का पैदा हो, और लड़के जो हैं वे अपनी बहनों और अपने माता-पिता, अपनी बेटियों को संपत्ति नहीं देते और सारी संपत्ति का वारिस लड़कों को बना देते हैं जो इस्लाम की शिक्षा के खिलाफ है और फिर वे लड़के भी संपत्ति बर्बाद कर देते हैं। तो यह तो दुनिया में हम देखते हैं और आज भी उदाहरण मिलते हैं। बहरहाल जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि विशेष रूप से जो वाकिफीन-ए-नौ माता-पिता हैं उन्हें अपने बच्चों के प्रशिक्षण की ओर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए और उनके लिए दुआ भी इस उद्देश्य के लिए करनी चाहिए कि वे बड़े होकर दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाले हों। वक़्फ़ करने वाले हों। यह नहीं कि केवल वक़्फ़-ए-नौ का टाइटल लगा दिया और बड़े होकर कह दिया कि हम तो अपना काम कर रहे हैं। बल्कि जो वाकिफीन-ए-नौ हैं वह पहले जमाअत से पूछें कि जमाअत को ज़रूरत है कि नहीं और अगर जमाअत उन्हें अपने काम करने की अनुमति देती है तो करें अन्यथा उन्हें ईमानदारी से अपनी वादे को पूरा करते हुए और माता पिता के वादे को पूरा करते हुए अपने आप को वक़्फ़ के लिए पेश करना चाहिए।

अत: औलाद के लिए दुआ और इच्छा इस सोच के साथ और इस दुआ के साथ होनी चाहिए कि ऐसी औलाद हो जो दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाली हो। जो हमारा यानी माता-पिता और परिवार के सम्मान को क़ायम करने वाली हो। अपने दादा पड़दादा के नाम का सम्मान क़ायम करने वाली हो। बहुत से ऐसे खानदान हैं जिनके पूर्वज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबियों में से थे। केवल उनकी औलाद होना ही पर्याप्त नहीं। बड़े लोग बड़े गर्व से बताते हैं। अच्छी बात है। लेकिन गर्व तब होना चाहिए कि वह नेकियाँ भी जारी हों। औलाद होना पर्याप्त नहीं है बल्कि माता-पिता का भी काम है कि अपने बच्चों के लिए यह भी दुआ करें कि वे उनकी नेकियाँ, बाप-दादा की नेकियाँ क़ायम करने वाले भी हों और जब यह दुआ माता-पिता कर रहे होंगे तो अपने पर भी नज़र रखेंगे क्योंकि हम अपने पूर्वजों के नाम को ज़िन्दा रखने वाले तभी बन सकते हैं जब हम अपने कर्मों पर भी नज़र रखने वाले हों। अत: अपने जायज़ों के साथ प्रत्येक को अंतिम समय तक बच्चों की नेक फितरत और नेक होने के लिए दुआ करते रहना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि: "ख़ुदा तआला की सहायता उन्हीं के साथ होती है जो हमेशा अच्छाई में आगे ही आगे कदम रखते हैं। एक जगह ठहर नहीं जाते और वही हैं जिनका अंत अच्छा होता है। और अंत अच्छा होने के लिए आपने फ़रमाया कि "अपने लिए और अपने बीवी बच्चों के लिए स्थायी दुआ करते रहना चाहिए।"

फिर आप हमें नसीहत करते हुए फरमाते हैं कि: "वह काम करो जो बच्चों के लिए सबसे अच्छा नमूना और सबक हो।" (यह माता पिता का काम है।) और इसके लिए आवश्यक है कि सबसे पहले खुद अपना सुधार करो। यदि आप उच्च स्तर के संयमी और परहेज़गार बन जाओगे और ख़ुदा तआला को प्रसन्न कर लोगे तो माना जाता है कि अल्लाह तुम्हारी औलाद के साथ भी अच्छा मामला करेगा। फ़रमाया कि "क़ुरआन शरीफ में खिज़र और मूसा अलैहिमस्सलाम का किस्सा दर्ज है कि इन दोनों ने मिलकर एक दीवार को बना दिया जो अनाथ बच्चों की थी। वहाँ अल्लाह तआला फरमाता है कि وَ كَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا (अलकहफ: 83) कि उनका पिता नेक था। यह उल्लेख नहीं किया कि वह ख़ुद कैसे थे।" (अर्थात बच्चे कैसे थे, बल्कि माता-पिता का उल्लेख किया।) इसलिए इस लक्ष्य को प्राप्त करो। बच्चों के लिए हमेशा उसकी नेकी की इच्छा करो" (मल्फूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 110, संस्करण 1985 मुद्रित इंग्लैंड) तो अल्लाह तआला औलाद के भले के लिए और उनके भोजन के लिए भी सामान पैदा करता रहेगा।

अत: यह वह बुनियादी सिद्धांत है जिसकी ओर बार-बार हज़रत मसीह मौऊद अलै-हिस्सलाम ने ध्यान दिलाया है और ये क़ुरआनी शिक्षा की ही व्याख्या है कि माता-पिता का अपना नमूना ही बच्चों के प्रशिक्षण में भूमिका निभाता है। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम में से प्रत्येक औलाद के लिए सबसे अच्छा नमूना बनने वाले हों। दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने के वादे को पूरा करने वाले हों। कुछ लोगों की आदतें होती हैं कि दूसरों को देखते रहते हैं कि वह कैसा है तो दूसरों पर नज़र रखने की बजाय अपने सुधार पर ध्यान देने वाले हों और संयम पर चलने वाले हों। तभी हम आगे नेक नसल (पीढ़ी) भी चला सकते हैं। अपने बच्चों के लिए स्थायी दुआएं करने वाले हों कि अल्लाह तआला हमारी औलाद को भी हमेशा हमारी आँखों की ठंडक बनाए रखे और फिर यह सिलसिला आगे भी चलता चला जाए।

अनुवादक: अली हसन एम. ए.

☆ ☆ ☆

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -5)

अत: यह एक बुनियादी बात है जिसे एक अहमदी मुसलमान हर समय अपने सामने रखता है और यही कारण है कि दुनिया के गरीब देशों में हम समाज सेवा के कई काम कर रहे हैं। जहां हमारी मस्जिदें बन रही हैं वहाँ हमारे स्कूल भी बन रहे हैं। हमारे अस्पताल भी बन रहे हैं बल्कि ऐसे गरीब देश और उनके remote areas में जहां बिजली और पानी नहीं है वहाँ मॉडल विलेज बना कर हम उन क्षेत्रों को बिजली और पानी मुहैया करा रहे हैं जिन्हें पहले इसकी कल्पना भी नहीं थी: हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: फ़रहत अहमद आचार्य)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की दिनांक 11 से 16 अप्रैल 2017 की व्यस्तताएं

11 अप्रैल 2017 (शेष रिपोर्ट)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का भाषण

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद, तअव्वुज़ और तस्मिय: के बाद फ़रमाया: समस्त माननीय अतिथिगण! अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू। अल्लाह आप सब पर हमेशा सलामती उतारता रहे। जैसा कि एक प्रतिष्ठित अथिति ने भी वर्णन किया की जो क़ुरआन की तिलावत सुनाई गई थी उसमें हमें यही हुक्म दिया गया है कि प्रार्थना के साथ तुम्हें अच्छा काम करना चाहिए और मूल धर्म यही है कि समाज सेवा के काम भी करो, गरीबों का ख्याल रखो, अनाथों का ख्याल रखो और इसी प्रकार के अन्य काम करो। अत: जब हम एक मस्जिद निर्माण करते हैं तो इस उम्मीद और आशा पर और इस सोच के साथ निर्माण करते हैं कि हमने इस शिक्षा का पालन करना है। जहां हम मस्जिद को इबादत (उपासना) के लिए आबाद करना है वहाँ हमने समाज सेवा के काम भी करने हैं।

अत: यह एक बुनियादी बात है जिसे एक अहमदी मुसलमान हर समय अपने सामने रखता है और यही कारण है कि दुनिया के गरीब देशों में हम समाज सेवा के कई काम कर रहे हैं। जहां हमारी मस्जिदें बन रही हैं वहाँ हमारे स्कूल भी बन रहे हैं। हमारे अस्पताल भी बन रहे हैं बल्कि ऐसे गरीब देश और उनके remote areas में जहां बिजली और पानी नहीं है वहाँ मॉडल विलेज बना के हम उन क्षेत्रों को बिजली और पानी मुहैया करा रहे हैं जिन्हें पहले इसकी कल्पना भी नहीं थी।

मैं हमेशा उदाहरण दिया करता हूं कि इन विकसित देशों में हमें पानी की क़दर नहीं है बावजूद इसके कि होटलों में भी और बाकी स्थानों पे भी लिखा जाता है कि पानी की बचत करो, पानी कम इस्तेमाल करो, पानी का सही उपयोग करो। लेकिन पानी का एहसास तब होता है जब हम गरीब अफ्रीकी देशों में वहाँ के दूरदराज के क्षेत्रों में जाएं जहां गांव के बच्चे बजाय शिक्षा प्राप्त करने के, बजाय स्कूल जाने के अपनी गरीबी की वजह से शिक्षा से भी वंचित हैं और न केवल शिक्षा से वंचित हैं बल्कि एक बाल्टी सर पे उठाके, एक बर्तन सर पे उठाके एक-एक दो-दो तीन-तीन किलोमीटर दूर जाकर जो गंदे पानी के तालाब हैं वहाँ से पानी ले कर आते हैं और फिर वह घर वाले इस पानी को भोजन के लिए भी इस्तेमाल करते हैं और पीने के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। तो ऐसी जगहों पर जब आप शुद्ध पेयजल दें, हैंडपंप लगाने या वाटर पम्प लगाएं उस समय जो उन लोगों की हालत होती है वह देखने वाली होती है। उनकी खुशी की कोई सीमा नहीं रहती। यहाँ पश्चिम में, यूरोप में, इंग्लैंड में भी लोगों की लॉटरी निकलती है। किसी के कई लाख डॉलर या पाउंड या यूरो लॉटरी निकले तो वह बड़ा खुश होता है और छलाँगें लगा रहा होता है। लेकिन अगर उस भावना और खुशी को महसूस करें जो इन गरीब बच्चों को उनके घर के दरवाजे के हुज़ूर साफ पानी मुहैया होने पे मिलती है तो लगता है उनकी कई लाख यूरो की लॉटरी निकल आई है।

अत: यह वह भावना है जो हमारे दिलों में है और जिसके लिए जहां हम अल्लाह तआला के लिए लोगों को बुलाते हैं वहाँ मानवता की सेवा के काम भी करते हैं और यही बात है जिसके लिए जमाअत अहमदिया के संस्थापक को अल्लाह ने भेजा और संस्थापक इस्लाम हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार भेजा क्योंकि संस्थापक इस्लाम ने यह कहा था कि एक समय आएगा जब दुनिया में जितने मुसलमान हैं उनकी अधिकता इस्लाम की मूल शिक्षा को भूल जाएगी और उस समय एक व्यक्ति अल्लाह की ओर से आएगा जो इस्लाम की सही शिक्षा को revive करेगा, फिर से स्थापित करेगा और सही इस्लामी शिक्षा दुनिया में फैलाएगा और यही कुछ हमने जमाअत अहमदिया के संस्थापक से सीखा। उन्होंने कहा कि चरमपंथ, आतंकवाद, जिहाद, युद्ध यह कोई इस्लाम नहीं हैं। मूल इस्लाम यही है कि तुम बन्दे को ख़ुदा से मिलाओ या अपने आप को ख़ुदा से मिलाओ और इसी उद्देश्य के लिए उन्होंने कहा कि मैं आया हूँ। दूसरा यह बताया कि एक दूसरे के हक़ अदा करो और यह दो बातें हैं जो जमाअत अहमदिया की शिक्षाओं का आधार हैं और यही बातें हैं जो आगे हज़रत मसीह मौऊद व अलैहिस्सलातो वस्सलाम की ख़िलाफ़त लेकर जा रही है।

एक ख़िलाफ़त दुनिया में बहुत प्रसिद्ध है जो आईएसआईएस कहलाती है, जिसने दुनिया में दंगा फैला दिया है। जिसने दुनिया में हर ओर आतंकवाद फैलाया हुआ है। न केवल पश्चिम में बल्कि अपने देशों में भी। इराक में सीरिया और दूसरे इस्लामी देशों में सैकड़ों हज़ारों लोगों की अकारण हत्या कर दी गई है। वह ख़िलाफ़त नहीं क्योंकि वह सही इस्लामी शिक्षा पे नहीं चल रही। और वह ख़िलाफ़त हो भी नहीं सकती क्योंकि वह उस तरीका के अनुसार नहीं आई जो संस्थापक इस्लाम (स.अव.) ने उल्लेख किया था और जो भविष्यवाणी फरमाई थी क्योंकि सही ख़िलाफ़त तभी आनी थी जब अल्लाह के भेजे हुए मसीह मौऊद और मेहदी मौऊद ने आना था और उसके बाद फिर इस काम काम को ख़िलाफ़त ने जारी रखना था जो काम करने के लिए अल्लाह ने उसे भेजा था और वह काम जैसा कि मैंने बताया अल्लाह तआला से बन्दे को मिलाना और एक दूसरे के अधिकार देना है। तो यह है बुनियादी अंतर वास्तविक ख़िलाफ़त और काल्पनिक ख़िलाफ़त में। इसे हमेशा याद रखना चाहिए। इसलिए इस्लाम की शिक्षा से किसी भी गैर मुस्लिम को डरने की या किसी प्रकार का भय रखने की जरूरत नहीं है।

यहां मेयर साहब ने उल्लेख किया कि इस क्षेत्र की मस्जिद में हमने एक पेड़ लगाया। जहां पेड़ और पौधे ज़ाहिरी तौर पर सौंदर्य के लिए लगाए जाते हैं, जहां फलदार वृक्ष फल प्राप्त करने के लिए लगाए जाते हैं, जहां पेड़ और हरियाली पर्यावरण को साफ करने के लिए लगाया जाता है, आजकल कलाईमेट चेंज का भी बड़ा ज़ोर है। पोलोशन का बड़ा जोर है और इसके लिए प्लान्टेशन भी की जाती है। लेकिन हमारे पेड़ उनके ज़ाहिरी पेड़ों के साथ प्यार के पेड़ भी हैं। हम वह पेड़ लगाना चाहते हैं जो ऊपरी तौर पर जहां पर्यावरण पर सौंदर्य प्रदर्शित करें, वातावरण साफ़ करें, फलदार हों तो फल दें, वहाँ प्यार के फल भी उन्हें लगने वाले हों और हमारे पड़ोसी हमारे अधिकतम प्यार और मुहब्बत और अपने अधिकारों को पाने के संदेश लेने वाले हों। अत: पेड़ की एक बाह्य स्थिति है। उस बाह्य स्थिति के साथ पेड़ की एक आध्यात्मिक स्थिति भी होती है जो हम अपने मन में रखते हैं और हर अहमदी को यह अपने ध्यान में रखना चाहिए।

हमारी एमपी महोदया ने भी सही बात की। उनकी भावनाओं का भी धन्यवाद। उन्होंने कहा कि आपसी समझ-बूझ से यहाँ लोग रहते है, जमाअत अहमदिया भी रहती है और इंशा अल्लाह इस मस्जिद के बनने के बाद यह समझ-बूझ की जो स्थिति है उसमें अधिक बेहतरी पैदा होगी। इंशा अल्लाह।

हम दुनिया में हर जगह मतभेद के खिलाफ आवाज उठाते हैं। हम दुनिया में हर जगह आतंकवाद के खिलाफ आवाज उठाते हैं और हम यही चाहते हैं कि दुनिया एक दूसरे से मतभेद करने के बजाय प्यार और मुहब्बत से रहे और आपस में मिलजुल कर रहे।

दुनिया में विभिन्न धर्म हैं बल्कि हम मुसलमानों के विश्वास के अनुसार तो अल्लाह ने दुनिया की हर क़ौम में नबी और अपने फरिस्तादे भेजे जिन्होंने अल्लाह तआला का संदेश पहुंचाया और हर क़ौम में आने वाला नबी और हर क़ौम में अल्लाह तआला का फरिस्तादा यह संदेश लेकर आया कि तुम अल्लाह तआला की

उपासना करो और नेकियों का प्रसार और यही वह शिक्षा है जो इस्लाम की शिक्षा है और हमारे विचार के अनुसार इस शिक्षा में अधिक विस्तार पैदा करके क़ुरआन में बड़े विस्तार से इस शिक्षा का वर्णन किया गया है।

लोग समझते हैं कि क़ुरआन में जिहाद के बारे में कहा गया है, आतंकवाद के बारे में कहा गया है, इसलिए ये मुसलमान आतंकवादी हैं। हालांकि क़ुरआन करीम में शांति और प्यार और मुहब्बत की शिक्षा बहुत अधिक है और अगर कहीं जिहाद की शिक्षा है तो जिहाद कुछ शर्तों के साथ है। वास्तव में एक यह बात समझने वाली है कि जिहाद के वास्तविक अर्थ कोशिश के हैं और बुराई को खत्म करने की कोशिश है और यही वास्तविक जिहाद है जो जमाअत अहमदिया कर रही है। एक ज़माना था जब मुसलमानों पर हमले किए जाते थे। हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में आपने किसी पर अत्याचार नहीं किया बल्कि आप[स] पर जब अत्याचार किया गया तो तब आपको अल्लाह तआला की ओर से उसका जवाब देने की अनुमति मिली और वह भी इस शर्त के साथ क़ुरआन करीम में यह भी लिखा हुआ है कि जो अत्याचारी लोग हैं ये धर्म को खत्म करना चाहते हैं केवल इस्लाम को नहीं, क़ुरआन में यह भी बड़ा स्पष्ट लिखा है कि अगर तुमने उनके हाथ न रोके तो न कोई चर्च बाकी रहेगा न कोई सीनागाग बाकी रहेगा न कोई मंदिर बाकी रहेगा और न कोई मस्जिद बाकी रहेगी जहां अल्लाह तआला का नाम लिया जाता है। तो इस विस्तार से क़ुरआन में वर्णित हुआ है। अत: यह हो नहीं सकता कि एक वास्तविक मुसलमान मस्जिद में जाने वाला कभी किसी दूसरे धर्म के खिलाफ कोई हरकत करने वाला हो। हाँ जब हमले हुए तो उस समय उत्तर दिए गए और युद्ध लड़े गए। इसीलिए एक अवसर पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने युद्ध से वापस आते हुए कहा कि हम छोटे जिहाद से जो हम पर मजबूरन थोपा गया था, बड़े जिहाद की ओर लौट रहे हैं, जहां हम प्यार और मुहब्बत की शिक्षा फैलाएंगे और क़ुरआन की शिक्षा फैलाएंगे और आपस में प्यार और मुहब्बत से रहेंगे। तो यह है वह वास्तविक इस्लाम जिस पर जमाअत अहमदिया अमल करती है और यह है वह वास्तविक इस्लाम जो हर मुसलमान को इस ज़माने में मानने की ज़रूरत है।

इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स।अ।व। का यह संदेश भी था कि जब वह व्यक्ति आएगा जो इस्लाम की सही शिक्षा का वर्णन करेगा और फैलाएगा तो तुम उसे मान लेना। अत: जमाअत अहमदिया की अगर यह शिक्षा है कि "मुहब्बत सब के लिए, नफरत किसी से नहीं" तो यह कोई नई शिक्षा नहीं बल्कि यह वह शिक्षा है जो इस्लाम की बुनियादी शिक्षा है और जो क़ुरआन करीम में वर्णित है और जिसे मुसलमान उलेमा अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों और हितों को पाने के लिए तोड़ मरोड़ कर पेश करते हैं और मुसलमानों को इतनी ताकत नहीं कि खुद देखें कि वास्तविक शिक्षा क्या है और यह गलत लीडरशिप (नेतृत्व) ही है जिसने मुसलमानों को गलत रास्तों पर डाल दिया है और इस्लाम की सही लीडरशिप (नेतृत्व) वही है जो संस्थापक इस्लाम की भविष्यवाणी के अनुसार आई और अब जमाअत अहमदिया इसे लेकर आगे चल रही है। तो यह इस्लाम की वास्तविक और बुनियादी शिक्षा है और मस्जिद के निर्माण का उद्देश्य। इसलिए हमारे पड़ोसियों के यदि कुछ भय थे तो उनके भय अब समाप्त हो जाने चाहिए कि मस्जिदों का उद्देश्य जहां उपासना करना है वहाँ लोगों के अधिकार पूरे करना है और पड़ोसियों के अधिकार देना है। शांति और सुरक्षा का संदेश पहुंचाना है।

इस्लाम का मतलब ही शांति और सुरक्षा है और हम इस विश्वास पर भी कायम हैं भले ही किसी का क्या धर्म है या किसी का धर्म नहीं है तब भी हम उस ख़ुदा पर विश्वास रखते हैं जो रब्बुलआलमीन है अर्थात समस्त लोगों रब्ब है जो उसके नियम हैं उसके तहत जहां वह धर्म के मानने वालों को ज़ाहिरी चीजें प्रदान करता है, धर्म को न मानने को भी ज़ाहिरी चीज प्रदान करता है।

हमारे विश्वास के अनुसार व्यक्ति की हिसाब मरने के बाद होगा। इसलिए हमें कोई अधिकार नहीं कि दुनिया में किसी के विषय में निर्णय करें कि कौन कैसा है। हाँ सही संदेश पहुंचाना प्यार और मोहब्बत का पैगाम पहुंचाना अल्लाह की ओर से आने वाले का संदेश पहुंचाना यह हमारा काम है जो हम करते चले जा रहे हैं और इंशाअल्लाह करते चले जाएंगे और मुझे उम्मीद है कि इस मस्जिद के बनने के बाद यहां के रहने वाले अहमदी पहले से बढ़कर इस काम को करेंगे। पहले से बढ़कर जहां मस्जिद में आकर अपनी इबादतों का हक़ अदा करने वाले होंगे वहाँ अपने पड़ोसियों के अपने दोस्तों के अपने साथियों का भी हक़ अदा करने वाले होंगे और हमेशा पहले से बढ़कर प्यार और मुहब्बत के संदेश हम सबको उनकी ओर से मिलेंगे और मैं उम्मीद करता हूं कि वह ऐसा ही करेंगे। अल्लाह करे कि ऐसा करें। धन्यवाद।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह खिताब 7 बजकर 17 मिनट पर समाप्त हो गया। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। उसके बाद निम्नलिखित इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के पत्रकार ने हुज़ूर अनवर का इंटरव्यू लिया।

मीडिया के प्रतिनिधियों का हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू
AUGSBERG TV
AUGSBERG ALLGEMEINE ZEITUNG
DIGITAL RADIO AUGSBERG
SONNTAG PRESS AUGSBERG

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर ने अपने भाषण में कहा है कि हमें इस्लाम की मूल शिक्षा की छवि को देखना चाहिए जो यह है कि मानवीय मूल्यों को अपनाया जाए। हम अधिक यह कहना चाहते हैं कि ईसाइयों, यहूदियों और मुसलमानों के लिए क्या आवश्यक है? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने कहा, मैं विशेष रूप से प्रेस वालों से यह कहना चाहता हूं कि जब आप इस्लाम की वह अवास्तविक तस्वीर देखते हैं कि आइएस अत्याचार करते हुए प्रस्तुत करता है तो आप इसे बड़ी सुर्खियों के साथ प्रकाशित कर देते हैं। लेकिन जब हम अपना संदेश प्रस्तुत करते हैं और लाखों लोग वार्षिक जमाअत में शामिल होते हैं तो इस बात की खबर ही नहीं देते। मुझे नहीं पता कि हमारे प्रेस वालों से लिंक सही नहीं या कोई और समस्या है या फिर आप वह समाचार देते ही नहीं जो सनसनीखेज़ न हों। यदि आप इस्लाम की वास्तविक तस्वीर पेश करना चाहते हैं तो इस संदेश का विस्तार करें जो हम प्रस्तुत करते हैं।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि हम क्या कर सकते हैं, कैसे सभी धर्म सद्भाव से रह सकते हैं? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने कहा: क़ुरआन कहता है कि आपका अपना धर्म है और मेरा अपना धर्म है और धर्म में कोई बाध्यता नहीं है। यदि मैं अच्छाई की ख़बर देता हूँ तो कुछ लोग इसे स्वीकार कर लेते हैं और हर साल चार लाख से अधिक लोग स्वीकार करते हैं और हमारी जमाअत में प्रवेश करते हैं। यह अच्छाई की खबर ही है। इसीलिए तो वे जमाअत में प्रवेश करते हैं। हम हमेशा यही कहते हैं बावजूद इसके कि विभिन्न धर्मों के अनुयायी हैं जैसे ईसाई हैं, यहूदी हैं, मुसलमान हैं, बौद्ध, हिंदू और सिख हैं लेकिन इन सब में एक बात साझी है और वह सर्वशक्तिमान ख़ुदा है तो हमें सर्वशक्तिमान ख़ुदा को खुश करने के लिए आपस में मिलजुल कर रहना चाहिए। दूसरी साझी बात इंसानियत है और इंसानियत की रक्षा के लिए हमें आपस में मिलजुल कर सद्भाव, शांतिप्रियता और प्रेम से रहना चाहिए। हुज़ूर अनवर ने कहा: एक दूसरे के साथ रहने से अभिप्राय एक दूसरे को जानना भी है। आपका एक अपना नजरिया है और मेरा एक अपना नजरिया है। एक परिवार में भी तो भाई बहन के विभिन्न नज़रिए होते हैं और जरूरी नहीं कि अगर वह आपके नज़रिए से सहमत न हों तो उनके विषय में बुरा भला कहें बल्कि आप उनके साथ प्यार से रहेंगे। इसलिए हमें भी बावजूद धर्म के विषय में विभिन्न आस्थाएँ रखने के एक परिवार की तरह रहना चाहिए।

*एक पत्रकार ने प्रश्न किया कि आपके अनुसार आज इस मस्जिद के उद्घाटन का ऐसे समय में क्या महत्व है जबकि दुनिया में आतंकवाद फैला है और एक दूसरे के खिलाफ युद्ध कर रहे हैं? इस पर हुज़ूर अनवर ने कहा: इसीलिए तो मैंने आज यह संदेश दिया है कि वास्तविक इस्लाम वह है जो हम प्रस्तुत कर रहे हैं और जो प्रचार कर रहे हैं। यही मूल और वास्तविक संदेश है और इसे हमें दुनिया के किनारों तक पहुंचाना चाहिए और हम अपने सामर्थ्य के अनुसार पूरी कोशिश कर रहे हैं कि इस संदेश को दुनिया के किनारों तक पहुंचाएं और हमारा संदेश दुनिया के किनारों तक पहुंच चुका है। आज वह जमाअत जिसकी एक व्यक्ति ने भारत के एक छोटे से गांव में बुनियाद रखी थी जबकि वहाँ पक्की सड़क तक नहीं थी, वह आज दुनिया के 209 देशों में फैल चुकी है और अहमदी दुनिया भर में बसते हैं।

अत: ऐसे समय में जब एक तरफ तो कुछ हिंसक मुसलमान इस्लाम की अवास्तविक तस्वीर पेश कर रहे हैं, ज़रूरत इस बात की है कि हम अधिक उत्साह से इस्लाम की वास्तविक तस्वीर पेश करें जो शांति, प्रेम और सद्भाव है।

*एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इस्लाम का अर्थ ही शांति है और हम शांतिप्रिय लोग हैं और हम इस शहर का हिस्सा हैं। इस प्रांत का हिस्सा हैं

और इस देश का हिस्सा हैं। इसलिए आप देखेंगे कि अहमदी हर लिहाज़ से समाज में इंटी गरेटड हैं और हम देश और क़ौम के सुधार के लिए प्रयासरत रहते हैं। हम अपने सभी प्रयास करते हैं कि दुनिया में अपने देश का नाम रोशन करें और यही काम हम कब से कर रहे हैं और अगर इस शहर माटो शांति है तो यही हमारा संदेश है यानी शांति, प्यार और सद्भाव, सहिष्णुता।

इसके बाद इस समारोह में शामिल होने वाले सभी मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ में भोजन किया। भोजन के बाद विभिन्न अतिथिगण बारी बारी हुज़ूर अनवर के पास आकर मुलाकात करते रहे। हुज़ूर अनवर प्रेमपूर्वक उनसे बातचीत फ़रमाते। उसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए लजना हॉल में तशरीफ़ ले गए जहां महिलाओं ने दीदार का सौभाग्य प्राप्त किया।

कार्यक्रम के अनुसार इस उद्घाटन समारोह के बाद यहां से म्यूनिख के लिए प्रस्थान करना था। आगस बर्ग से म्यूनिख की दूरी 90 किलोमीटर है। 8 बजकर 10 मिनट पर यहां से प्रस्थान किया और करीब एक घंटा पांच मिनट की यात्रा के बाद 9:15 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मस्जिद अल महदी म्यूनिख पहुंचे। जहाँ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की कार मस्जिद अल महदी के बाहरी परिसर में पहुंची, अहबाबे जमाअत, पुरुषों और महिलाओं और युवाओं और बुज़ुर्गों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़े उत्साह पूर्वक स्वागत किया। बच्चों और बच्चियों के समूह ने दुआ रूपी कविताएं पढ़ीं और स्वागत गीत पेश किए। हर छोटा बड़ा अपने हाथ बढ़ा कर अपने प्यारे आक़ा का स्वागत कर रहा था। महिलाएं अपने प्यारे आक़ा के दर्शन से लाभान्वित हो रही थीं।

लोकल सदर जमाअत मुज़फ्फर गोंदल साहब, क्षेत्रीय अमीर ज़फरनागी साहब उपदेशक श्रृंखला म्यूनिख उस्मान नवीद साहब और नेता ख़ुद्दामुल अहमदिया म्यूनिख राहील अहमद साहब ने हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ ऊंचा करके सबको अस्सलामु अलैकुम कहा और मस्जिद के अंदर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर ने नमाज़ मग़रिब व इशा जमा करके पढ़ाएं। नमाज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के बाहरी भाग में तशरीफ़ लाए और मेहराब की ओर मस्जिद के विस्तार के संबंध में मुक़ामी जमाअत के सदर साहिब को निर्देश दिए और कहा कि कोई वास्तुकार इस संदर्भ से सही योजना करके आपको बताएगा।

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ लजना हॉल में तशरीफ़ ले गए जहां महिलाएँ दीदार से लाभान्वित हुईं। यहाँ म्यूनिख में रात रहने का प्रबंधन Freising के क्षेत्र में होटल Marriott में किया गया था। मस्जिद से रवाना होकर लगभग बीस मिनट की यात्रा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने आवास स्थल पर तशरीफ़ लाए।

मेहमानों के भाव (तास्सुरात)

आज मस्जिद बैतुल नसीर के उद्घाटन समारोह में शामिल होने वाले कुछ मेहमानों ने अपने भाव और दिली भावनाओं को व्यक्त किया कि ख़लीफ़तुल मसीह के भाषण ने उनके दिल पर गहरा असर किया है। कुछ मेहमानों के भाव निम्न हैं:-

*एक अतिथि ने हुज़ूर अनवर के भाषण के बाद अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: यह बहुत ही हसीन संदेश है जो पहुंचाया जा रहा है। मेरी यह तमन्ना है कि आपका संदेश इस्लामी देशों के अक्सर लोगों तक पहुंचे। इससे शांति अधिक स्थापित होगी। एक अहमदी टैक्सी ड्राइवर के निमंत्रण पर मैं इस कार्यक्रम में शामिल हुआ। भाग्यशाली हूं कि मैंने इस निमंत्रण को स्वीकार किया। मैंने बहुत कुछ सीखा। आपकी जमाअत के लिए सफलता की कामना करता हूँ। हमें आप जैसे लोगों की आवश्यकता है।

*एक अतिथि ने कहा ख़लीफा का खिताब बहुत प्रभावशाली था। विशेषकर जिन मूल्यों का उल्लेख किया गया है वे मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। मेरा कोई धर्म तो नहीं लेकिन इन मूल्यों का पालन कर सकता हूँ। अफ्रीका में पानी मुहैया करने के काम ने बहुत प्रभावित किया है। आप लोग सही रास्ते पर अग्रसर हैं। ज़रूरत इस बात की है कि अधिक से अधिक लोगों को अपने संदेश से परिचित हों।

*एक अतिथि ने कहा ख़लीफ़ा का शांति युक्त संदेश आकर्षक था। आपको चाहिए कि इस संदेश को दुनिया भर में फैलाएँ।

*एक जर्मन स्कूल टीचर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा मैं अपने स्कूल के बच्चों को इस्लाम के हवाले से उनके सवालों के जवाब नहीं दे सकती थी क्योंकि मीडिया में जो कुछ आता था वह इस्लाम का अत्यंत विरोधी होता था। आज इस कार्यक्रम में ख़लीफ़तुल मसीह के भाषण से मुझे इतनी अधिक सामग्री मिल गई है कि मैं अपने छात्रों को अब इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत करा सकती हूँ। मैं आपके ख़लीफ़ा की बहुत आभारी हूँ।

*एक जर्मन महिला ने कहा: ख़लीफ़तुल मसीह की बातें सुनकर मेरे दिल पर गहरा असर हुआ है। मैं नहीं जानती थी कि इस्लाम की शिक्षा इतनी हसीन और सुंदर है। ख़लीफ़तुल मसीह की बातें सुनकर मेरे दिल में सवाल उठता है कि इतनी हसीन शिक्षा के बावजूद इस्लाम इतना बदनाम क्यों हो गया है? दुआ करती हूँ कि आपका इस्लाम फैले और सब लोगों तक पहुंचे।

*एक महिला जो दहरिया (निरीश्वरवादी) हैं कहने लगीं कि आपके ख़लीफ़ा ने आज जो बातें की हैं इस समय दुनिया को इन बातों की बहुत ज़रूरत है। इस शहर में कई जर्मन ऐसे हैं जो इस्लाम से डरते हैं। मेरे मित्रों में भी ऐसे लोग हैं जिन्होंने मुझे इस कार्यक्रम में आने से रोका था। मेरा सुझाव है कि आप ख़लीफ़ा की बातों को अखबारों में प्रकाशित, रेडियो पर प्रसारित और उसके पमफ्लैट्स प्रकाशित करके नगर के लोगों में वितरित करें ताकि उनके दिलों से भय दूर हो।

*एक अतिथि ने कहा मेरे लिए हुज़ूर अनवर भाषण में वर्णित किये गये सभी बिंदु नए थे।

*एक अतिथि Marianne Weib साहिबा जो ग्रीन पार्टी की स्थानीय संगठन की चेयरपर्सन हैं, अपने विचार व्यक्त करते हुए कहने लगीं कि ख़लीफ़तुल मसीह यह भाषण बहुत पसंद आया कि ख़िलाफ़त अहमदिया या जमाअत अहमदिया का ISIS की तथाकथित ख़िलाफ़त से कोई संबंध नहीं है। दूर का भी वास्ता नहीं है। आज मुझे इस्लाम की मूल वास्तविक शिक्षाओं का पता चला। अहमदियत का शांति, प्यार और भाईचारे का संदेश मूल इस्लामी शिक्षाएं हैं।

*हुज़ूर अनवर के व्यक्तित्व को देखकर एक जर्मन युवक ने कहा कि आप मेरी भावनाओं को शायद न समझ सकें। मेरे दादाजी कुछ समय पहले स्वर्ग सिधार गए थे और वह मेरे लिए सबसे अच्छे दोस्त थे और मुझे उपदेश किया करते थे आज जब मैंने हुज़ूर अनवर को देखा तो मुझे ऐसा लगा कि सर्वशक्तिमान ख़ुदा ने मुझे मेरे दादा प्रदान कर दिए हैं।

*एक जर्मन अतिथि Mr. Sven ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बचपन में अपने माता पिता के साथ पोप से मिलने रोम गया था। मुझे वहाँ अध्यात्म महसूस हुआ था। मैं समझता था कि ईसाइयत सच्ची है लेकिन आज यहाँ पर आकर ख़लीफ़तुल मसीह को देखकर और आपका भाषण सुनकर मुझे विशेष प्रकार की आध्यात्मिकता महसूस हुई है जिसका मुझ पर गहरा असर है। मेरे दिल के जितने भी भय थे वे दूर हो गए हैं।

*आगस बर्ग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर Dr. Klaus Wolf ने कहा जो ख़लीफ़ा ने कहा है अगर वह वास्तव में आपका संदेश है तो आपको बहुत सफलता प्राप्त होगी। प्रोफेसर साहब इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने विश्वविद्यालय में प्रदर्शनी लगाने की पेशकश की और इसकी इच्छा व्यक्त की कि जमाअत सार्वजनिक तौर पर अधिक प्रसिद्ध हो। आपका संदेश प्रत्येक तक पहुंचे।

*एक अतिथि ने कहा ख़लीफ़ा के भाषण द्वारा हमें आपकी आस्थाओं, इस्लाम की वास्तविक शिक्षा और जमाअत के सेवा कार्यों से परिचय हुआ। इस्लाम की वास्तविक शिक्षा तो इसके बिलकुल विपरीत है जो उग्रवादी मुसलमानों के विषय में धारणा है। हमें आज सही तथ्य का पता चला है।

*एक महिला Mrs. Stock ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि हमारा यह सौभाग्य है कि आप जैसे शांतिपूर्ण लोग हमारे शहर का हिस्सा हैं।

*एक अतिथि ने कहा आज के समारोह में शामिल होने के लिए आपका बहुत आभारी हूँ। ख़लीफ़तुल मसीह का खिताब बहुत प्रभावी और उत्साहजनक था। यहां लोगों का एक मेज पर एक साथ बैठना एकजुटता, ईमानदारी और सम्मान के उत्साहजनक संकेत हैं।

* एक मुसलमान अतिथि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे हैरत हुई कि आपके ख़लीफ़ा अपने इतने बड़े पद को केवल शांति और प्रेम को बढ़ावा देने के लिए इस्तेमाल करते हैं और आप के स्वभाव में दुनियादारी नहीं है और न ही राजनीतिक उद्देश्य हैं।

*एक जर्मन महिला ने हुज़ूर अनवर का खिताब सुनने के बाद कहा कि काश सब मुसलमान ऐसे ही होते। ख़लीफ़ा के चेहरे से बहुत प्रकाश, धैर्य और शांति उजागर होता है। **(.....शेष पृष्ठ 7 पर)**

पृष्ठ 2 का शेष

هُمۡ عَلٰی صَلَاتِهِمۡ يُحَافِظُوۡنَ (अल-अनआम: 93) मोमिनों की यह शान है कि वह अपनी नमाज़ों की खूब रक्षा करते हैं। अर्थात शैतान उनकी नमाज़ को खराब करना चाहता है लेकिन वे उसके हमलों से उसे अच्छी तरह बचाते हैं। अत: प्रत्येक को चाहिए कि अपनी नमाज़ की हिफाज़त करे और जब नमाज़ पढ़ने खड़ा हो तो यह समझे कि ख़ुदा तआला के समक्ष चला गया हूं। और जब नमाज़ ख़त्म हो तो अपने दाहिने और बाएँ लोगों को बशारत दे कि मैं तुम्हारे लिए सलामती लाया हूँ। लेकिन अगर कोई व्यक्ति ख़ुदा के समक्ष नहीं जाता बल्कि अपने विचारों में ही संलग्न रहता है तो उसे सोचना चाहिए कि जब वह अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह कहता है तो कितना झूठ बोलता है। वह लोगों को बताना चाहता है कि मैं ख़ुदा कि सामने से आ रहा हूँ हालांकि वह वहाँ गया ही नहीं था। अत: आप लोगों को कोशिश करनी चाहिए कि पूरी तरह अपनी नमाज़ की सुरक्षा करें और शैतान से खूब मुकाबला करते रहें जो आप को ख़ुदा के समक्ष से हटाने की कोशिश करता है। और याद रखें कि अगर आप पूरी नमाज़ में भी इससे मुकाबला करते रहेंगे और उस से आगे गिरेंगे नहीं तो अल्लाह तआला आप को अपने दरबार में ही समझेगा। लेकिन अगर गिर जाएंगे तो अल्लाह तआला भी आपका हाथ छोड़ देगा। इसलिए आप को मुकाबला ज़रूर करते रहना चाहिए। अगर इस तरह करेंगे तो आख़िरकार आप ही सफल होंगे।

ज़िक्र जहरी (ऊंची आवाज़ से):

इस समय तक मैंने तीन प्रकार के ज़िक्रों का वर्णन किया है। प्रथम नमाज़, दूसरा क़ुरआन करीम, तीसरे वे ज़िक्र जो नमाज़ के अतिरिक्त किए जाते हैं लेकिन एकांत में किए जाते हैं। अब एक प्रकार का ज़िक्र बाकी रह गया और वह ज़िक्र है जो मज्लिस में किया जाता है। इस ज़िक्र के भी दो तरीके हैं-

पहला यह तरीका

कि अपने धर्म वालों के साथ जहां मिलने का मौका मिले वहाँ बजाय व्यर्थ और बेहूदा बातों के अल्लाह तआला की शक्तियों, उसकी महिमा और उसके परोपकार का ज़िक्र किया जाए, उसकी आयतों का वर्णन हो इससे दिल साफ होता है और हृदय पर अत्यंत नेक प्रभाव पड़ता है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत है कि एक बार आप घर से बाहर आए तो देखा कि मस्जिद में कुछ लोग दुआ में संलग्न हैं और कुछ एक गोला बनाकर बैठे हैं और धर्म की बातें कर रहे हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन में बैठ गए जो गोला बनाकर बैठे थे और कहा कि यह काम इससे बेहतर है जो दूसरे लोग कर रहे हैं। इससे मालूम होता है कि ज़िक्र ज़ाहिरी भी कभी कभी ज़िक्र सिर्री (छुपे हुए) से फ़ज़ीलत (उत्कृष्टता) रखता है। कभी-कभी मैंने इसलिए कहा है कि वह भी अपने समय पर आवश्यक होता है। हाँ जिस समय लोग इकट्ठा हों उस समय ज़िक्र ज़ाहिरी उपयोगी होता है, क्योंकि इसके द्वारा अन्य लोगों के अनुभव सुनकर और अपने उन्हें सुना कर लाभ और उपयोगिता का अधिक मौका मिलता है और ऐसे समय में अलग ज़िक्र कई बार अहंकार का कारण भी हो जाता है। क़ुरआन का दर्स भी इस प्रकार के ज़िक्र में सम्मिलित है और एक धर्म मानने वालों में ख़ुत्बा तथा उपदेश भी इसी में शामिल हैं।

दूसरी किस्म:

इस ज़िक्र की यह है कि जो विरोधियों की मज्लिसों में किया जाता है। इस्लाम के अतिरिक्त सभी धर्म अल्लाह तआला की विशेषताओं में कुछ न कुछ कमी और अधिकता करने वाले हैं। अत: उनके सामने अल्लाह तआला को उसकी वास्तविक शान और शौकत में प्रकट करना भी एक ज़िक्र है। जैसा कि सूरत मुद्दस्सर में अल्लाह तआला फरमाता है कि-

يٰۤاَيُّهَا الۡمُدَّثِّرُ - قُمۡ فَاَنۡذِرۡ - وَ رَبَّكَ فَكَبِّرۡ (अल-मुदस्सिर- 2,4)

इसमें लोगों को अल्लाह तआला के अज़ाब से डराने के अतिरिक्त उनके सामने अल्लाह तआला की बड़ाई बयान करने का आदेश दिया गया है और तकबीर ज़िक्र में शामिल है। अत: अन्य धर्मों के लोगों के सामने अल्लाह तआला की विशेषताओं का वर्णन करना और उसकी सत्यता के लिए तर्क देना भी ज़िक्रे इलाही में शामिल हैं।

سَبِّحِ اسۡمَ رَبِّكَ الۡاَعۡلَى (अलआला: 2)

में भी इसी ज़िक्र की ओर इशारा किया है और साफ शब्दों में

فَذَكِّرۡ اِنۡ نَّفَعَتِ الذِّكۡرٰى (अलआला: 10)

कहकर उसका नाम स्पष्ट शब्दों में 'ज़िक्र' रखा है।

ज़िक्र के लाभ:

अब में ज़िक्र करने के कुछ लाभ बताता हूं। **सब से बड़ा लाभ** जो ज़िक्र करने से प्राप्त होता है वह तो यह है कि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल हो जाती है। इस का यह मतलब नहीं कि यह नेक काम है इसलिए दूसरे कामों की तरह इस से ख़ुदा प्रसन्न हो जाता बल्कि, इस से विशेष रूप से प्रसन्न होता है क्योंकि जितना कोई बड़ा काम हो उतना ही उसका बड़ा पुरस्कार भी दिया जाता है। ज़िक्र से संबंधित एक जगह अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है। 'वलज़िक्रुल्लाह अकबर' कि अल्लाह तआला का ज़िक्र बहुत बड़ा है और दूसरे स्थान पर फ़रमाया-

وَعَدَ اللّٰهُ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَ الۡمُؤۡمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا وَ مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِىۡ جَنّٰتِ عَدۡنٍ وَرِضۡوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكۡبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ (अत्तौब: 72)

कि सब से बड़ा पुरस्कार अल्लाह की रज़ा है। चूंकि अकबर का पुरस्कार भी अकबर (सबसे बड़ा) ही हो सकता है। असगर (सबसे छोटा) नहीं। इसलिए इन दोनों अकबरों ने बता दिया कि अल्लाह की रज़ा किस के बदले में मिलती है। ज़िक्रुल्लाह के बदला में इस आयत में अल्लाह तआला ने दूसरे पुरस्कार को वर्णन फरमा कर رِضۡوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكۡبَرُ से बता दिया कि 'रिज़वान' कोई और नई चीज़ है और यह सबसे बड़ी है और वास्तव में बन्दा के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार यही है कि अल्लाह तआला उस पर राज़ी हो। इस बड़े पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए अल्लाह तआला ने फरमा दिया कि ज़िक्ररुल्लाह करोगे तो यह दूसरा अकबर जो रिज़वानुल्लाह है, मिल जाएगा।

दूसरा लाभ यह है कि इससे दिल की संतुष्टि मिलती है अत: अल्लाह तआला फरमाता है-

اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَ تَطۡمَئِنُّ قُلُوۡبُهُمۡ بِذِكۡرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكۡرِ اللّٰهِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ (अर्रअद:29)

दिलों को ज़िक्र से सन्तुष्टि प्राप्त होती है, क्यों? इसलिए कि घबराहट उस समय पैदा होती है जब व्यक्ति यह समझे कि मैं इस मुसीबत से मरने लगा हूँ और अगर यह विश्वास हो कि प्रत्येक परेशानी और असुविधा का इलाज है तो वह नहीं घबराएगा। अत: जब कोई व्यक्ति अल्लाह तआला का ज़िक्र करता है और समझता है कि अल्लाह तआला असीमित शक्तियां रखता है और हर प्रकार के कष्टों को दूर कर सकता है तो उसका दिल कहता है कि जब मेरा ऐसा ख़ुदा है तो मुझे किसी मुसीबत से घबराने की क्या ज़रूरत है। वह ख़ुद इसे दूर कर देगा इस तरह उसे संतुष्टि प्राप्त हो जाती है।

तीसरा लाभ यह है कि ज़िक्र करने वाले बन्दे को अल्लाह तआला अपना दोस्त बना लेता है और इसी दुनिया में उसे अपनी बारगाह में याद करता है।

فَاذۡكُرُوۡنِىۡۤ اَذۡكُرۡكُمۡ وَ اشۡكُرُوۡا لِىۡ وَ لَا تَكۡفُرُوۡنِ (अलबक़रा:153)

हे मेरे बन्दो ! तुम मेरा ज़िक्र करो मैं तुम्हारा ज़िक्र करूंगा। अल्लाह तआला को

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوۡ تَقَوَّلَ عَلَيۡنَا بَعۡضَ الۡاَقَاوِيۡلِ لَاَخَذۡنَا مِنۡهُ بِالۡيَمِيۡنِ ثُمَّ لَقَطَعۡنَا مِنۡهُ الۡوَتِيۡنَ (अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 2019-2017/45- Vol. 2 Thursday 10-17 Aug 2017 Issue No. 32-33

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

याद करना यही है कि अपना सानिध्य प्रदान करता है। जिस तरह दुनिया में राजा का किसी को याद करना यही होता है कि उसे अपने दरबार में बुलाता है उसी तरह अल्लाह तआला भी करता है।

चौथा लाभ यह है कि अल्लाह तआला का ज़िक्र आदमी को बुराइयों से रोकता है। अत: क़ुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है-

اُتْلُ مَآ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ (अन्कबूत: 46)

रसूले करीम को अल्लाह तआला फरमाता है कि तुझको ख़ुदा ने जो किताब दी है वह लोगों को पढ़ कर सुना और नमाज़ को क़ायम कर। नमाज़ बुराइयों और गन्दिगयों से रोकती है और अल्लाह का ज़िक्र करना बहुत बड़ा है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह तआला उसे जानता है। जैसा कि पहले मैंने बताया है नमाज़ भी ज़िक्रुल्लाह है। यह साबित हो गया कि ज़िक्रुल्लाह गन्दगियों और बुराइयों से रोकता है। क्यों? इसलिए कि ज़िक्रुल्लाह एक बड़ी भारी चीज़ है जब शैतान के सिर पर मारा जाएगा तो वह मर जाएगा और बुराइयों की तहरीक नहीं होगी।

पांचवां लाभ यह है कि दिल मज़बूत होता है मुकाबला की शक्ति पैदा होती है। व्यक्ति हारता नहीं बल्कि मुकाबला में मज़बूती से खड़ा रहता है जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है-

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِیْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (अनफाल: 46)

हे मुसलमानों जब किसी शक्ति के मुकाबला में जाओ और वह ज़बरदस्त हो तो उसके लिए यह करो कि अक्सर अल्लाह तआला का ज़िक्र करना शुरू कर दिया करो। इसका नतीजा यह होगा कि तुम्हारे दुश्मनों के पांव उखड़ जाएंगे और तुम उस पर जीत पा लोगे।

छठा लाभ यह है कि ज़िक्र करने वाला व्यक्ति अपने हर उद्देश्य में सफल हो जाता है बशर्ते वह सच्चे दिल से ज़िक्र करता हो। इसका सबूत भी इसी आयत से निकलता है जो मैंने पांचवें लाभ से संबंधित पढ़ी है। अल्लाह तआला फरमाता है-

وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ अल्लाह तआला का ज़िक्र करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

सातवां लाभ यह है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि कयामत के दिन सात लोगों के सिर पर ख़ुदा का साया होगा (सुनन तिरमज़ी)। और उन में से एक ज़िक्र करने वाला होगा। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि वह ऐसा ख़तरनाक दिन होगा कि सभी मानव डरते होंगे और अल्लाह तआला उस दिन ऐसा क्रोधित होगा जैसा कभी नहीं हुआ। क्योंकि सभी दुष्ट लोग उसके सामने प्रस्तुत किए जाएंगे। सूरज बहुत करीब हो जाएगा। ऐसी स्थिति में जिस पर अल्लाह तआला का साया होगा समझ लेना चाहिए कि वह कैसा भाग्यशाली होगा।

आठवां लाभ यह है कि ज़िक्र करने वाले की दुआ स्वीकार हो जाती है। क़ुरआन में जो दुआएं आई हैं उनसे पहले ज़िक्र अर्थात तस्बीह और तहमीद भी आई है। पहली दुआ सूर: फातिहा ही है, उसको

بسم اللّٰه الرحمن الرحیم اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۙ﴿۲﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۙ﴿۳﴾ مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ؕ﴿۴﴾

से शुरू किया है। और اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ को बीच में रखा है। जो आधी अल्लाह तआला के लिए और आधी बन्दा के लिए है। फिर

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ۙ﴿۶﴾ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ ۙ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّیْنَ

फरमाया यह दुआ है। तो पहले अल्लाह तआला ने ज़िक्र रखा है और बाद में दुआ। दुनिया में भी हम देखते हैं कि जब कोई मांगने वाला किसी के पास आता है तो पहले उसकी प्रशंसा करता है और फिर अपना प्रश्न प्रस्तुत करता है। तो जब मनुष्य ख़ुदा के सामने जाता है तो उसे पहले ख़ुदा तआला की शक्ति और अपनी विनम्रता को स्वीकार कर लेना चाहिए। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने भी अपने बारे में इसी तरह दुआ की है कि -

لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ (अल अंबियाय : 88)

पहले अल्लाह तआला की महिमा वर्णन की है और फिर अपनी हालत पेश की है। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं-

مَنْ شَغَلَهٗ ذِكْرِیْ عَنْ مَسْئَلَتِیْ اَعْطَیْتُهٗ اَفْضَلَ مَا اُعْطِی السَّائِلِیْنَ

ख़ुदा तआला फरमाता है कि जो कोई मेरे ज़िक्र में लगा रहता है उसे मैं, उसकी अपेक्षा जो वह मांगता रहता है, अधिक देता हूँ। इस हदीस का यह मतलब नहीं कि दुआ नहीं करनी चाहिए। क्योंकि सूरे फातिहा जो उम्मुल किताब है इसमें ज़िक्र के साथ दुआ भी है और क़ुरआन और हदीसों में बहुत सी दुआएँ सिखाई गई हैं, बल्कि यह मतलब है कि जो व्यक्ति ज़िक्र न करे और दुआ ही करे उससे उस व्यक्ति को अधिक दिया जाता है जो दुआ के अतिरिक्त ज़िक्र भी करे और दुआ के समय से बचाकर ज़िक्र के लिए समय व्यतीत करे।

नौवां लाभ यह है कि गुनाह माफ होते हैं रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जो तकबीर और तहमीद और तस्बीह करता है उसके गुनाह माफ हो जाते हैं यद्यपि समुद्र के झाग के बराबर क्यों न हों। (तिर्मिज़ी)

दसवां लाभ यह है कि बुद्धि तेज़ हो जाती है और ज़िक्र करने वाले पर ऐसे ऐसे मआरिफ़ और तथ्य खुलते हैं कि वह ख़ुद भी हैरान हो जाता है। अल्लाह तआला फरमाता है-

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّاُولِی الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۱﴾ الَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰی جُنُوْبِهِمْ وَ یَتَفَكَّرُوْنَ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(आले इमरान: 191-192)

कि पृथ्वी और आकाश का जन्म तथा दिन और रात के मतभेद में बहुत सी निशानियां हैं लेकिन उन्हीं लोगों के लिए जो बुद्धिमान हों। फिर बताया कि बुद्धिमान लोग वे होते हैं जो अल्लाह तआला के ज़िक्र में संलग्न और उसके कामों पर फिक्र करने में व्यस्त रहते हैं।

ग्यारहवां लाभ यह है कि तक्वा (संयम) पैदा होता है। हदीस में आता है-

فَاِنْ ذَكَرَنِیْ فِیْ نَفْسِهٖ ذَكَرْتُهٗ فِیْ نَفْسِیْ وَاِنْ ذَكَرَنِیْ فِیْ مَلَاٍ ذَكَرْتُهٗ فِیْ مَلَاٍ خَیْرٍ مِنْهُمْ وَاِنْ تَقَرَّبَ اِلَیَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ اِلَیْهِ ذِرَاعًا وَاِنْ تَقَرَّبَ اِلَیَّ ذِرَاعًا اِقْتَرَبْتُ اِلَیْهِ بَاعًا وَاِنْ اَتَانِیْ یَمْشِیْ اَتَیْتُهٗ هَرْوَلَةً (बुखारी किताबुल तौहीद)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरा बन्दा जब दिल ही दिल में मेरा ज़िक्र करता है तो मैं भी अपने दिल ही दिल में ज़िक्र करता हूँ। जैसे जब व्यक्ति कहता है सुबहान अल्लाह अर्थात पवित्र है अल्लाह तआला तो अल्लाह तआला भी बंदा के बारे में कहता है कि तुझे भी पवित्रता प्राप्त हो। और जब अल्लाह तआला यह कह देता है तो मिल ही जाती है। फिर फरमाता है जब बंदा लोगों में वर्णन करता है तो मैं उन लोगों से बेहतर, जिनमें वह मेरा ज़िक्र करता है, उस का ज़िक्र करता हूँ। अर्थात मुत्तिकयों और नेकों में उस का ज़िक्र बुलंद करता हूँ और दुनिया स्वीकार करती है कि वह मुत्तक़ी (संयमी) है।

बारहवां लाभ यह है कि मुहब्बत बढ़ती है क्योंकि मनुष्य का नियम है कि जिस चीज़ से हर समय उस का संबंध रहे उससे मुहब्बत पैदा हो जाती है। यहां तक कि जिस गांव या शहर मैं आदमी रहता है उस से भी मुहब्बत पैदा हो जाती है। अत: जब बंदा सुबह व शाम बल्कि हर अवसर पर अल्लाह तआला को बार बार याद करता और नाम लेता है तो धीरे धीरे अल्लाह तआला का प्रेम उसके दिल में बढ़ता जाता है।

ये हैं ज़िक्रुल्लाह के लाभ जो मैंने संक्षेप में वर्णन कर दिए हैं और दुआ करता हूँ कि आप लोगों को और मुझे भी अल्लाह तआला इनसे लाभांवित करे। आमीन

(समाप्त)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad